नारीलोक

मार्च 2026 अंक 332

अध्यक्षीय कार्यालय
SUMAN NAHATA
G-67, Kirti Nagar, New Delhi, 110015
Mob no: 9818854120
Email: sumannahata67@gmail.com

अध्यक्षीय टंकार

मेरी प्यारी बहनों!
जय जिनेन्द्र।

मार्च का महीना सचमुच रंगों और रौनक का महीना है। जैसे-जैसे ऋतु बदलती है, नई उमंगें, नई तरंगें और नये रंग जीवन में भर जाते हैं। इस माह का आगाज़ होता है होली के रंगों से लाल, पीला, नीला, हरा और केसरिया। ये रंग केवल चेहरे नहीं रंगते बल्कि दिलों को भी जोड़ते हैं। होली का संदेश है सौहार्द, समन्वय, सहअस्तित्व और सहिष्णुता। होलिका दहन की ज्वाला हमें याद दिलाती है कि बुराई चाहे कितनी भी प्रबल क्यों न हो, अंततः सद्गुणों की विजय ही निश्चित है।मार्च केवल होली का ही नहीं बल्कि अनेक पर्वों और पर्वतुल्य अवसरों का महिना है। वूमेन्स डे (8 मार्च) हमें स्मरण कराता है कि नारी शक्ति केवल परिवार ही नहीं, समाज और राष्ट्र की भी आधारशिला है। नारी अगर संकल्प ले तो पीढ़ियाँ बदल सकती हैं, संस्कृतियाँ पुनर्जीवित हो सकती हैं। गुड़ी पाड़वा नया संवत्सर लेकर आता है, जो हमें बताता है कि हर नयी सुबह, हर नये साल के साथ हम नये संकल्प गढ़ें। गणगौर स्त्री की सौम्यता और सौभाग्य का पर्व है, जो हमें यह प्रेरणा देता है कि नारी जीवन की धड़कन बने, घर की समृद्धि और परिवार की मधुरता की आधारशिला बने। रामनवमी और महावीर जयंती जैसे महापर्व इस माह को विशेष आध्यात्मिक ऊँचाई देते हैं। एक ओर श्रीराम की मर्यादा और आदर्श हैं, दूसरी ओर महावीर की अहिंसा और आत्मशक्ति का संदेश है। यह दोनों ही संदेश आज के भटके हुए समाज को राह दिखाने वाले दीपस्तंभ हैं।

बहनों! आज हमारा समाज बदल रहा है। कभी एक ही आंगन में संयुक्त परिवारों की किलकारियां गूंजती थीं। बड़े छोटे का आदर, स्नेह जीवन की जन्मघूंटी में घुला होता था। अब रिश्तों की गरमाहट धुंधली पड़ रही है। आधुनिकता और प्रगति के नाम पर हम उस दिशा में भाग रहे हैं, जहां तनाव है, कुंठा है और घुटन है। संस्कृति की जड़ों पर चोट हो रही है और सभ्यता के नाम पर केवल दिखावा बचा है। ऐसे में सवाल यही है कि हम किस ओर जा रहे हैं? ज्योतिचरण आचार्य महाश्रमण ने इस संकट को बहुत गहराई से पहचाना और कहा था- "संस्कृति को प्राणवान बनाने का प्रयत्न और संस्कृति की जड़ पर प्रहार करने वाला चरित्र, यह सबसे बड़ा विरोधाभास है। जब तक चरित्र का विकास नहीं होगा, तब तक न स्वस्थ परिवार संभव है और न स्वस्थ समाज।" इसीलिए नारी की भूमिका यहाँ निर्णायक बनती है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने स्वस्थ परिवार योजना के अंतर्गत किशोरियों, युवतियों और बुजुर्गों- तीनों पीढ़ियों को जोड़ने के लिए ठोस कार्यक्रम बनाए। किशोरों की तर्कशक्ति और उत्साह को सही दिशा देना जरूरी है, ताकि वे भटके नहीं। युवाओं को यह समझना होगा कि जीवन का अर्थ केवल मनमानी नहीं, बल्कि जिम्मेदारी भी है। और बुजुर्गों के अनुभव और आशीर्वाद परिवार के लिए छाया हैं, जिनके बिना जीवन अधूरा है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने वृद्धावस्था को सार्थक बनाने के सूत्र निरन्तर दिए हैं- शांतिपूर्ण जीवनशैली, सौद्देश्य जीवनक्रम, उपलब्धिपूर्ण और विकासपूर्ण जीवन। सचमुच, बुजुर्ग तब भार नहीं, उपहार बनते हैं जब वे जीवन के पलपल को रचनात्मक दिशाएं देते हुए सक्रिय जीवन जीते हैं। परंतु यह तभी संभव है जब परिवार में संवाद और संवेदना दोनों का प्रवाह बना रहे। इसके लिये महिलाओं को अन्य गतिविधियों के साथ-साथ पारिवारिक वातावरण को स्नेहपूर्ण और जीवंत बनाए रखने हेतु विशेष प्रयास करने होंगे। वे बुजुर्ग पीढ़ी को भार नहीं, उपहार समझे और उनके जीवन की सांझ को उत्सवमय बनाये।बहनों! त्यौहार हमें केवल रस्में निभाने के लिए नहीं बुलाते, बल्कि यह आत्ममंथन के अवसर हैं। होली के साथ यह विचार भी हो कि हमने अपने जीवन को कितना आनंदमय और ज्योतिर्मय बनाया। रामनवमी पर यह संकल्प हो कि मर्यादा हमारे जीवन की रीढ़ बने। महावीर जयंती पर यह प्रण हो कि अहिंसा और आत्मबल हमारे व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा बने। वूमेन्स डे पर यह निश्चय हो कि नारी केवल अधिकारों की बात न करे, बल्कि अपने कर्तव्यों और शक्ति को भी पहचान कर परिवार व समाज को ऊंचा उठाने का संकल्प ले। शांति की राह आत्मजागरण से होकर गुजरती है। हमें दुनिया की नहीं, पहले अपनी चिंता करनी चाहिए- यह स्वार्थ नहीं, परमार्थ है। यदि संसार न भी बदले, तो भी हमें स्वयं बदलना चाहिए। यही प्रयास दूसरों को भी बदलने की प्रेरणा देगा और यहीं से मैत्री, सहअस्तित्व और करुणा का जन्म होगा- मित्रों के लिए ही नहीं, शत्रुओं तक के लिए।

हमारे समय का सबसे बड़ा संकट यह है कि हम अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं। आधुनिकता और प्रगति की चकाचौंध में हम अपनी पहचान खोते चले जा रहे हैं। यह त्रासदी केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, समाज और राष्ट्र स्तर पर भी दिखाई देती है। एक तरफ तकनीक, शिक्षा, राजनीति और भौतिकता का विस्तार हो रहा है, तो दूसरी तरफ संस्कृति, परंपरा और मूल्य बिखरते जा रहे हैं। यह दौर पहचान खोने का दौर है, जहां व्यक्ति अपने भीतर से खाली होता जा रहा है और समाज अपनी आत्मा से। हमारे पर्व यही तो कहते हैं कि हम अपनी जड़ों और संस्कृति से जुड़े।

पल-पल प्रेम बढ़ाना सीखें, रिश्तों को निभाना सीखें।
वाद-विवाद तो होते रहेंगे, रहना-सहना संग-संग सीखें।।

मार्च माह के इन पावन पर्वों के अवसर पर यही हमारा मंगलभाव और शुभकामना।

स्नेहाकांक्षी
सुमन नाहटा

उषा

भिक्षुगाथा

भिक्खू स्वाम-चमत्कारी नाम

जबलपुर, मध्य प्रदेश का एक समृद्ध नगर है। वहाँ के प्रमुख श्रावकों द्वारा बार-बार निवेदन करने पर आचार्य कालुगणी ने मुनिश्री चंपालालजी (मीठिया) ठाणा-5 का चातुर्मास जबलपुर फरमाया। संतों का विहार हुआ। ई.स. 1933, वैशाख पूर्णिमा का दिन था। साथ में मुनिश्री छोगजी, मुनिश्री चुन्नीलालजी, मुनिश्री केशरीमलजी और मुनिश्री दुलीचंदजी थे। नागपुर से करीब 160 कि.मी. आगे कुरई गाँव आया। कुरई गाँव से 6 कि.मी. आगे कुरई घाटी पड़ती है, जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है। उस घाटी के किनारे एक बाबाजी (अग्नि तपने वाले एक योगी) का आश्रम था। संतों ने वहाँ कुछ देर विश्राम करने के पश्चात पुनः विहार प्रारंभ किया। विहार के समय संतों के साथ सत्ताईस व्यक्तियों का एक संघ चल रहा था और बाबाजी भी उनके साथ सम्मिलित हो गए।

चलते-चलते मुनिश्री चंपालालजी को प्यास लगी। सड़क के मध्य बैठकर उन्होंने जैसे ही पानी का पात्र होठों से लगाया, तभी मुनिश्री केशरीमलजी बोले- "शेर, शेर, शेर!" सभी का ध्यान उस दिशा में गया, जहाँ शेरों का एक युगल खड़ा था। सभी के प्राण जैसे अटक गए। यूँ लगा मानो मृत्यु सामने ही खड़ी हो।

बिना पानी पिए ही मुनिश्री चंपालालजी ने 'भिक्खू स्वाम, भिक्खू स्वाम' कहते हुए पानी से भरे पात्र को सड़क पर उंडेल दिया और उस पानी से सड़क बीचो-बीच एक लकीर बना दी। उन्होंने सभी से कहा, "स्वामीजी का जाप करो। धर्म के प्रताप से सभी विघ्न टल जाते हैं।"

सभी मुनिश्री एवं श्रावक जन "भिक्खू स्वाम, भिक्खू स्वाम" का जाप करने लगे। लगभग दो-तीन मिनट तक शेर सड़क के बीचों बीच खड़े रहे। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो एक अदृश्य संघर्ष चल रहा हो-ये शेरों को देख रहे थे और शेर इन्हें देख रहे थे।

अचानक शेर चौंक उठे, उनके कान खड़े हो गए। उन्होंने अपनी दुम दबाई और डरते हुए वहाँ से हट गए। कुछ ही क्षणों में वे भागकर झाड़ियों में ओझल हो गए। यह दृश्य देखकर बाबाजी सहित सभी लोग अचंभित रह गए। बाबाजी ने मुनिश्री चम्पकलालजी से पूछा, "महात्माजी, यह कौन-सा मंत्र है? गजब! जंगल का राजा, शेर भी एक कदम आगे न बढ़ा सका।कमाल हो गया, कमाल।"

मुनिश्री चम्पकलालजी ने तब अपने गुरु, इष्ट, आराध्य भिक्खू स्वाम की महिमा बताई। उन्होंने कहा, "स्वामीजी का नाम ही मंगलमय है। संकटमोचन उस नाम से सारे कार्य सिद्ध होते हैं। वे दिव्य पुरुष थे, अलौकिक प्रतिभा-संपन्न थे, महायोगी सिद्ध साधक थे। यदि कोई श्रद्धा-भक्ति से उनका स्मरण करे तो हाजर-नाजर अनुभव होता है। यह मेरे गुरु के नाम की करामात है- भिक्खू स्वाम, भिक्खू स्वाम।"

आचार्य श्री महाश्रमण जी वाणी

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है- "पुरिसा तुममेव तुमं मित्तं किं बहिया मित्तमिच्छसि?"

हमारी दुनिया में मित्र होते हैं, मित्र बनाए भी जा सकते हैं। सबका अपना-अपना friend circle भी होता है। शास्त्रकार ने एक गहरी बात कही कि- "हे पुरुष! तुम ही अपने मित्र हो, फिर बाहर क्यों मित्र खोज रहे हो?" एक आध्यात्म के परिप्रेक्ष्य में और निश्चयनय के संदर्भ में यह बात बहुत ठीक (appropriate) लग रही है कि अपनी आत्मा ही अपनी मित्र है।

"अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठियो।" जैन आगम में कहा गया है कि आत्मा अपनी मित्र है और आत्मा अपनी शत्रु भी है। यानि तुम ही तुम्हारे मित्र भी हो और तुम ही तुम्हारे शत्रु भी हो। तो प्रश्न उठता है कि हमारी आत्मा ही कैसे हमारी मित्र और हमारी आत्मा ही कैसे हमारी शत्रु बन सकती है? शास्त्रों में कहा गया है कि जब आत्मा सत्प्रवृत्ति में लग जाती है, तब हमारी आत्मा मित्र बन जाती है। और दुष्प्रवृत्ति में लग जाती है, तो हमारी ही आत्मा हमारी शत्रु बन जाती है।

जैसे आत्मा अहिंसा में, क्षमा भाव में है, शांत भाव में है, निरहंकारिता के भाव में है, विशुद्ध भक्ति के भाव में है, ऋजुभाव में है, सरल स्वभाव में है, संतोष में है, धर्म में स्थित है - तब आत्मा हमारी मित्र है। वैसे ही हिंसा में प्रवृत्त, क्रोध-आक्रोश के भाव में है, अहंकार के भावों में है, छल-कपट में है, लोभाकुल आत्म, अधर्म में, पाप में स्थित पापात्मा हमारी शत्रु बन जाती है।

बोध: हम स्वयं के मित्र बने। धर्म के मार्ग पर चले, सन्मार्ग पर चले, अध्यात्म के मार्ग पर चले।

संदर्भ: प्रवचन (15 दिसंबर 2020, पाली)

प्रमुखा श्री जी संदेश

शुभाशंसा!

प्रतिवर्ष 8 मार्च को महिला दिवस मनाया जाता है। उस दिन अखबारों में, टी.वी. चैनल पर महिलाओं की दक्षता और सफलता के स्वर बुलंद होते हैं। महिलाओं ने विकास के अनेक क्षेत्रों में अपने कदम बढ़ाए हैं और सफलता के परचम भी फहराए हैं। वैदिक काल में गार्गी, मैत्री ने ज्ञान के क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त की। राजनीतिक क्षेत्र में इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, शीला दीक्षित एवं सुषमा स्वराज ने उन्मुक्त भाव से कार्य किया। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, पन्नाधाय आदि वीरांगनाओं ने भी देशभक्ति का परिचय दिया। अंतरिक्ष में कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, संगीत के क्षेत्र में लता मंगेशकर तथा आई.ए.एस. ऑफिसर बनकर किरण बेदी ने देश का गौरव बढ़ाया।

जैन समाज में भी अनेक महान महिलाएँ हुई हैं, जैसे ब्राह्मी, सुन्दरी आदि। उन्होंने शिक्षा, साहित्य एवं कला के क्षेत्र में कीर्तिमान बनाया। नारी सशक्तिकरण के इस युग में महिलाएँ घर की चारदीवारी से निकलकर धरती से अंतरिक्ष तक उड़ान भरने के लिए कटिबद्ध हैं। उनकी यह उड़ान तभी तक सुरक्षित रह सकती है, जब तक चरित्र की डोर नैतिक मूल्यों से संपृक्त रहेगी। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाएँ संकल्प करें कि हम अपने चरित्र के प्रति जागरूक रहें और शील सुरक्षा का सदैव प्रयत्न करती रहें।

जैन विश्व भारती (लाडनूं)
साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने बनाया गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड

देशभर में आयोजित व्यापक सर्वाइकल कैंसर स्क्रीनिंग एवं जन-जागरूकता अभियान के माध्यम से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित कर एक नया इतिहास रच दिया है। यह अभियान राष्ट्रीय स्तर पर एक संगठित, सुनियोजित और प्रभावशाली स्वास्थ्य पहल के रूप में सामने आया, जिसने महिला स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस ऐतिहासिक अभियान में देश के विभिन्न राज्यों, शहरों एवं क्षेत्रों से अभूतपूर्व सहभागिता देखने को मिली। बड़ी संख्या में महिलाओं ने इस पहल का लाभ उठाया और स्वास्थ्य परीक्षण कराया। विशेष उल्लेखनीय यह रहा कि यह जांच पूर्णतः निःशुल्क आयोजित की गई थी और इसका लाभ केवल तेरापंथी महिलाओं तक सीमित न होकर सभी जाति, वर्ग एवं समुदाय की महिलाओं को समान रूप से प्रदान किया गया।

यह विश्व कीर्तिमान संगठन की सामूहिक शक्ति, अनुशासन और नारी नेतृत्व का सशक्त प्रमाण है। सुव्यवस्थित योजना, सशक्त प्रबंधन और समर्पित कार्यशैली के साथ इतने व्यापक स्तर पर एक साथ अभियान का सफल संचालन अपने आप में एक असाधारण उपलब्धि है। चिकित्सा विशेषज्ञों के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में न केवल स्क्रीनिंग की व्यवस्था की गई, बल्कि सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम, समय पर जांच और उपचार के महत्व के प्रति भी महिलाओं को जागरूक किया गया।यह उपलब्धि न केवल अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के लिए, बल्कि तेरापंथ के सम्पूर्ण नारी समाज के लिए गर्व का क्षण है। इस उपलब्धि ने यह सिद्ध कर दिया कि जब संगठित नारी शक्ति सेवा और संकल्प के साथ आगे बढ़ती है, तो वह विश्व स्तर पर भी अपनी पहचान स्थापित कर सकती है।

सेवा और संकल्प की इस स्वर्णिम यात्रा में यह कीर्तिमान ABTMM के सामाजिक योगदान का एक प्रेरणास्रोत अध्याय है। यह उपलब्धि भविष्य में भी समाजहित के कार्यों के लिए नई ऊर्जा, नई दिशा और नए संकल्प का आधार बनेगी तथा महिला स्वास्थ्य और जागरूकता के क्षेत्र में संगठन की प्रतिबद्धता को और अधिक सुदृढ़ करेगी।

◆ महिला मंडल-करणीय कार्य ◆

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में

NGO Meet
7th March 2026

गृह लक्ष्मी स्वाभिमान अभियान

कार्यक्रम का उद्देश्य (Objective)

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य यह है कि गृहिणी को केवल घर संभालने वाली न मानकर, उसे सम्मान, आत्मविश्वास और अधिकारों के साथ एक सशक्त व्यक्ति के रूप में स्थापित किया जाए।

* गृहिणी के द्वारा किए गए घरेलू कार्यों को समाज और अर्थ व्यवस्था में योगदान के रूप में मान्यता दिलाना।
* महिलाओं में यह भावना जागृत करना कि उनका श्रम, समय और त्याग मूल्यवान है।
* परिवार, समाज और प्रशासन - तीनों स्तरों पर गृहिणी के अधिकारों पर विचार और संवाद को आगे बढ़ाना।
* आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल कमाई तक सीमित न रखकर, निर्णय लेने की क्षमता, आत्मसम्मान और सुरक्षा तक विस्तृत करना।

पारिवारिक स्तर

परिवार वह पहली इकाई है जहाँ से बदलाव की शुरुआत होती है। यदि परिवार में गृहिणी को सम्मान और अधिकार मिले, तो समाज स्वतः बदलेगा।

1. आय में सहभागिता एवं आर्थिक स्वामित्व
   * गृहिणी घर का पूरा बजट संभालती है, फिर भी उसे आर्थिक रूप से आश्रित माना जाता है।
   * परिवार में यह सोच विकसित हो कि घर की आय में उसका योगदान अप्रत्यक्ष होते हुए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

* बैंक खाते, बचत और निवेश में गृहिणी की भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

2. संयुक्त संपत्ति अधिकार

* घर, जमीन, दुकान या अन्य संपत्तियों में महिला का नाम होना उसका अधिकार है, केवल औपचारिकता नहीं।

* इससे महिला में सुरक्षा की भावना और आत्मविश्वास बढ़ता है।

3. निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता

* बच्चों की शिक्षा, विवाह, स्वास्थ्य, निवेश जैसे निर्णयों में गृहिणी की सक्रिय भूमिका हो।

* पूछ लेना नहीं, बल्कि साथ बैठकर निर्णय लेना - यह भाव विकसित करना है।

राष्ट्रीय / सरकारी स्तर

सरकार और नीतियाँ तब प्रभावी होती है, जब वे गृहिणी की वास्तविक स्थिति को समझें।

1. गृहिणी पेंशन एवं सामाजिक सुरक्षा

* जिस प्रकार असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को योजनाएँ मिलती हैं, उसी प्रकार गृहिणियों के लिए भी पेंशन, वृद्धावस्था सहायता और सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ होनी चाहिए।

2. स्वतंत्र स्वास्थ्य बीमा कवरेज

* गृहिणी का स्वास्थ्य पूरे परिवार की रीढ़ है।

* उनके नाम से स्वतंत्र स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है, न कि केवल पति पर निर्भरता।

3. घरेलू श्रम की सांकेतिक आर्थिक मान्यता

* भले ही सीधे वेतन न मिले, पर सरकारी सर्वे, नीतियों और दस्तावेजों में घरेलू श्रम का आर्थिक मूल्य स्वीकार किया जाए।

सामाजिक स्तर

समाज की सोच बदले बिना स्थायी परिवर्तन संभव नहीं है।

1. सकारात्मक परिचय एवं भाषा अभियान

* हाउसवाइफ के स्थान पर गृह प्रबंधक, परिवार की स्तंभ, गृह लक्ष्मी जैसे सम्मानजनक शब्दों का प्रयोग।

* भाषा बदलेगी, तो दृष्टि बदलेगी।

2. कौशल विकास एवं वित्तीय साक्षरता

* गृहिणियों को डिजिटल ज्ञान, वित्तीय योजना, छोटे व्यवसाय, आत्मरोजगार से जोड़ा जाए।

* उन्हें यह सिखाया जाए कि बैंकिंग, बीमा और निवेश कैसे समझें।

3. वार्षिक गृह नेतृत्व सम्मान

* समाज में उन गृहिणियों को सम्मानित किया जाए जिन्होंने परिवार, संस्कार, समाज या सेवा के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान दिया है।

* इससे अन्य महिलाओं को भी प्रेरणा मिलेगी।

शाखाओं हेतु संदेश

यह अभियान केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि

* सोच बदलने की शुरुआत
* गृहिणी को सम्मान देने का संकल्प
* परिवार से राष्ट्र तक जागरूकता की यात्रा है।

आप सभी शाखाओं की भूमिका इसमें सेतु की तरह है जो विचारों को बुलंदियों तक पहुँचाएगी।

कार्यप्रणाली

* प्रेरणा गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ
* विषय पर पैनल चर्चा / विचार-विमर्श
* प्रेरणा सम्मान प्रदान
* चारित्रात्माओं एवं अध्यक्षीय उद्बोधन

प्रेरणा सम्मान

गृहिणी का सर्वोच्च योगदान उसके द्वारा दिए गए संस्कार होते हैं। संयम और दीक्षा जैसे उच्च आदर्शों के पीछे उसकी मौन साधना और मूल्य-निर्माण की शक्ति निहित होती है। ऐसी मातृशक्ति का सम्मान समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा। आपके क्षेत्र से किसी परिवार से साधु, साध्वी, समणी या मुमुक्षु हैं, तो उन्हें संस्कार देने वाली माता को इस कार्यक्रम में प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया जाए। यदि माता उपलब्ध न हो तो या दादी/नानी को भी यह सम्मान प्रदान किया जा सकता है। सम्मान पत्र को फ्रेम करवा कर ही प्रदान करें।

विशेष आमंत्रण

कार्यक्रम में सामाजिक, प्रशासनिक अथवा राजनीतिक क्षेत्र की प्रतिष्ठित महिला व्यक्तित्व को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाए, ताकि नीति-स्तर पर भी इस विषय को सार्थक दिशा मिल सके।

पत्रकार वार्ता

कार्यक्रम के उपरांत प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की जाए, जिसमें निम्न बिंदुओं को मीडिया के माध्यम से समाज तक पहुँचाया जाए।

* विचार-विमर्श के प्रमुख निष्कर्ष
* प्रस्तावित मांगें एवं संकल्प
* आगामी कार्ययोजना

दिनांक: 7 मार्च 2026

समय: लगभग 2 से 2.5 घंटे

स्थान: स्थानीय शाखा अनुसार

आवश्यक निर्देश

1. जिन NGO को कार्यक्रम हेतु आमंत्रित किया जाए, उनके अध्यक्ष/संयोजक अथवा प्रमुख पदाधिकारी का नाम एवं संपर्क विवरण अनिवार्य रूप से संयोजिका श्रीमती निधि सेखानी मो.98796 33133 को 8 मार्च 2026 तक प्रेषित करें।
2. कार्यक्रम की संक्षिप्त एवं video clips तैयार कर प्रेषित करें तथा उन्हें social media पर Reels के रूप में प्रसारित करें, ताकि अभियान को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हो सके।
3. कस्बा, गाँव, नगर और महानगर - इन चारों स्तरों पर जो महिला मंडल इस अभियान से सर्वाधिक एनजीओ को जोड़ेगा, उसे राष्ट्रीय अधिवेशन में विशेष सम्मान से अलंकृत किया जाएगा।
4. कार्यक्रम हेतु बैनर की डिज़ाइन साथ में संलग्न है। उसी डिज़ाइन का उपयोग किया जाए।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के पावन अवसर पर आयोजित 'प्रेरणा सम्मान समारोह' एवं एनजीओ संवाद बैठक हेतु प्रमाणपत्र तथा औपचारिक आमंत्रण पत्र के अधिकृत प्रारूप इस पृष्ठ पर प्रकाशित किए जा रहे हैं। संबंधित पीडीएफ़ पृथक रूप से प्रेषित की जाएगी, कृपया निर्धारित प्रारूप का अनिवार्य रूप से पालन करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

रोहिणी, लाडनूं 341 306. (राज.)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

7 मार्च 2026

प्रेरणा सम्मान

सन्तान 'मां' के आंगन का वह राजहंस है, जिसे सिंचते-सिंचते 'मां' की आंखों में पलता विश्वास कब 'संकल्प से सिद्धि' में बदल जाता है, पता ही नहीं चलता। इसीलिए 'मां' सिर्फ 'मां' ही होती है।

गृहिणी का सर्वोच्च योगदान उसके द्वारा दिए गए संस्कार होते हैं। संयम और दीक्षा जैसे उच्च आदर्शों के पीछे उसकी मौन साधना, तपस्या और मूल्य-निर्माण की शक्ति निहित होती है। ऐसी मातृशक्ति केवल परिवार ही नहीं, अपितु समाज और धर्मसंघ की भी आधारशिला होती है।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, मातृशक्ति की इन्हीं अनंत क्षमताओं के सम्मान में, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026 के पावन अवसर पर, उस गौरवमयी माता/दादी/नानी का अभिनंदन करते हुए स्वयं को धन्य अनुभव करता है, जिनकी पावन प्रेरणा और संस्कारों से प्रेरित होकर उनकी सन्तान ने तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षा ग्रहण कर संयम-पथ को अपनाया।

आपकी मौन साधना, त्याग और मूल्यनिष्ठ पालन-पोषण ने धर्मसंघ को एक समर्पित साधक प्रदान किया है। आपका यह अमूल्य योगदान समस्त समाज के लिए प्रेरणा-स्रोत है।

वर्ष 2026 में ..... (क्षेत्र) की श्रीमती ..... को उनके द्वारा प्रदान किए गए उत्कृष्ट संस्कारों एवं तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित सन्तान के माध्यम से धर्म-साधना के अप्रतिम योगदान हेतु 'प्रेरणा सम्मान' से विभूषित करते हुए हम गौरव की अनुभूति करते हैं। आपकी मातृ-शक्ति को कोटि-कोटि नमन।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
के निर्देशन में

सुमन लाहटा — राष्ट्रीय अध्यक्ष
रचना हिरण — महामंत्री

तेरापंथ महिला मंडल, ...

..... अध्यक्ष

..... मंत्री

संस्था का लेटरहेड

दिनांक : .....

सेवा में,
अध्यक्ष / सचिव
..... (संस्था का नाम)
..... (पता)

विषय : गृह लक्ष्मी स्वाभिमान अभियान – अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित NGO Meet हेतु आमंत्रण

सम्मानित अध्यक्ष/सचिव,

सादर जय जिनेन्द्र।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 7 मार्च 2026 को गृह लक्ष्मी स्वाभिमान अभियान के अंतर्गत एक विशेष NGO Meet का आयोजन किया जा रहा है।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गृहिणियों को केवल घर तक सीमित भूमिका में न देखकर, उन्हें सम्मान, आत्मनिर्भरता और अधिकारों के साथ एक सशक्त व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करना है। परिवार, समाज और राष्ट्रीय स्तर पर गृहिणियों के योगदान को मान्यता दिलाना तथा उनके स्वाभिमान को सुदृढ़ करना इस कार्यक्रम का मूल भाव है।

कार्यक्रम के अंतर्गत

* गृहिणियों के श्रम एवं योगदान पर विचार-विमर्श,
* सामाजिक व प्रशासनिक स्तर पर जागरूकता संवाद,
* प्रेरणा सम्मान तथा
* विभिन्न संगठनों के साथ समन्वय द्वारा व्यापक जनजागरण का संकल्प लिया जाएगा।

आपकी प्रतिष्ठित संस्था समाजसेवा एवं महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रही है। अतः इस महत्वपूर्ण अभियान में आपकी सहभागिता हमारे लिए अत्यंत प्रेरणादायक एवं सार्थक सिद्ध होगी।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधि सहित इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर अपने विचारों एवं अनुभवों से कार्यक्रम को समृद्ध करें। कृपया अपनी उपस्थिति की पुष्टि करते हुए प्रतिनिधि का नाम एवं संपर्क विवरण अवश्य प्रेषित करने की कृपा करें।

आपकी सकारात्मक सहभागिता की प्रतीक्षा में।

सादर,

अध्यक्ष
तेरापंथ महिला मंडल, ...
संपर्क : 00000 00000

Certificate of Appreciation

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

के निर्देशन में

तेरापंथ महिला मंडल, ...

द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में
गृह लक्ष्मी स्वाभिमान अभियान के अंतर्गत आयोजित NGO Meet में

की गरिमामयी सहभागिता, महिला सशक्तिकरण के प्रति प्रतिबद्धता तथा समाज में जागरूकता प्रसार हेतु आपके सराहनीय योगदान के सम्मानस्वरूप यह प्रमाण-पत्र सादर प्रदान किया जाता है।

आपके सतत् सहयोग एवं समाजोत्थान के प्रति समर्पण के लिए हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं तथा भविष्य में भी ऐसे ही प्रेरणादायी कार्यों की अपेक्षा करते हैं।

दि. 7 मार्च 2026

अध्यक्ष — मंत्री

बागबान

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा जीवन के प्रत्येक चरण को स्पर्श करते हुए विविध कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं- गर्भसंस्कार से लेकर कन्यामंडल, नवविवाहित एवं दाम्पत्य जीवन तक, आध्यात्मिक संवर्धन से लेकर संस्कार एवं कौशल निखारने तक। इसी सशक्त श्रृंखला में अब वरिष्ठ नागरिकों के लिए "बागबान" नामक एक नवीन एवं स्नेहपूर्ण पहल प्रारंभ की जा रही है।

यह कार्यक्रम जीवन की संध्या बेला को उत्साह, आत्मीयता, सम्मान एवं सक्रियता से आलोकित करने का एक सार्थक प्रयास है, जिससे हमारे वयोवृद्धजन अनुभव, संवाद और सहभागिता के माध्यम से स्वयं को समाज की मुख्य धारा से जुड़ा हुआ अनुभव कर सकें।

बहनें एवं परिवारजन अभी से तैयार रहें तथा अपने घर के वरिष्ठ सदस्यों को इस सुंदर एवं प्रेरणादायी पहल से जोड़ने का संकल्प लें, ताकि उनका जीवन अनुभव और आनंद से परिपूर्ण हो सके।

संयोजिका श्रीमती सुनीता जैन 98685 16242

सह संयोजिका

श्रीमती संगीता बाफना 98360 60000 | श्रीमती मधु कटारिया 99804 43204 | श्रीमती सुषमा बैंगानी 6293 223 357

श्रीमती रूबी बाफना 99104 91115 | श्रीमती मिताली जैन 97828 23483 | श्रीमती बिंदु भंसाली 98985 33078

श्री उत्सव – नारी सशक्तिकरण का अभियान

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार समस्त शाखा मंडल 15 जून से 15 जुलाई के मध्य अपने-अपने क्षेत्र में "श्री उत्सव" का आयोजन करें।

इस उत्सव के माध्यम से बहनों को एग्ज़ीबिशन, हस्तशिल्प एवं रचनात्मक गतिविधियों द्वारा अपनी प्रतिभा एवं उद्यमिता प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा, जिससे उनका आत्मविश्वास एवं आर्थिक सशक्तिकरण बढ़ेगा।

श्री उत्सव की नियमावली

- श्री उत्सव में स्वरोजगार रत बहनों को प्रस्तुति का अवसर दिया जाए तथा महिला मंडल की योजनाओं हेतु एक सूचना स्टॉल अनिवार्य रूप से लगाया जाए।
- कार्यक्रम में धन-संबंधी खेल, हाउजी या टैरो आदि शामिल न हों; केवल सांस्कृतिक एवं स्वस्थ मनोरंजन गतिविधियाँ ही हों।
- उत्सव का प्रचार सोशल मीडिया पर किया जाए और निर्धारित बैनर प्रारूप का ही उपयोग किया जाए।
- आयोजन की सूचना पंद्रह दिन पूर्व राष्ट्रीय संयोजिका को दी जाए तथा उद्घाटन स्थानीय सम्मानित अतिथि द्वारा कराया जाए।

संयोजिका — श्रीमती सुषमा बैंगानी 62932 23357

सह संयोजिका — श्रीमती समृद्धि बोकाड़िया 90290 55220

Skill Up

"स्किल अप – क्राफ्ट टू करियर" महिलाओं की प्रतिभा और कौशल को पहचान कर उसे आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ाने का एक सशक्त प्रयास है। इस कार्यक्रम के माध्यम से महिलाओं को उनके हुनर को पेशेवर रूप देने और उसे आय के स्रोत में परिवर्तित करने की प्रेरणा दी जा रही है। "स्किल अप" केवल कौशल विकास ही नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और स्वावलंबन को भी सुदृढ़ करने का माध्यम बन रहा है।

फरवरी माह में आयोजित सत्र में प्रसिद्ध लेखक ज़ामा हबीब ने मार्गदर्शन प्रदान किया। वे लोकप्रिय धारावाहिकों जैसे अनुपमा, ये रिश्ता क्या कहलाता है एवं ससुराल गेंदा फूल की लेखिका रही हैं। उनके अनुभव और प्रेरक विचारों ने प्रतिभागी बहनों को रचनात्मकता को करियर में परिवर्तित करने की नई दृष्टि दी। मार्च माह के सत्र में प्रसिद्ध लेखक, अभिनेता एवं निर्माता आतिश कपाड़िया का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। वे लोकप्रिय धारावाहिकों खिचड़ी, साराभाई वर्सेस साराभाई, बा-बहू और बेबी से जुड़े रहे हैं। साथ ही उनकी लिखी फिल्में आँखें और मन विशेष रूप से चर्चित रही हैं। उनकी आगामी फिल्म चुंबक शीघ्र ही नेटफ्लिक्स पर प्रदर्शित होने वाली है।

बहनें अधिक से अधिक इस सत्र से जुड़कर अपने कौशल को निखारने एवं उसे सफल करियर में परिवर्तित करने का सार्थक प्रयास करें।

संयोजिका श्रीमती रेखा सिंयाल 98339 21332

सह संयोजिका

श्रीमती समृद्धि बोकड़िया 90290 55220 | श्रीमती मिताली जैन 97828 23483 | श्रीमती सुप्रिया राकेचा 92512 22863 | श्रीमती रितु चोपड़ा 98710 11401 | श्रीमती नूतन लोढ़ा 98693 71153

अंकुरम

"अंकुरम- गर्भ शिशु संस्कार" परियोजना के अंतर्गत गर्भवती महिलाओं एवं मातृत्व की तैयारी कर रही बहनों को संस्कारमय, सकारात्मक तथा आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के माध्यम से आहार, संतुलित दैनिक दिनचर्या, मंत्र-जप, योग, ध्यान एवं सकारात्मक मनोवृत्ति से संबंधित समग्र प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे भावी पीढ़ी के संस्कारित एवं सशक्त निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सके।

इस पहल की विशेषता यह है कि इसके सत्र अनुभवी विषय-विशेषज्ञों द्वारा संचालित किए जाते हैं। विशेष रूप से डॉ. दीपिका जी जैन, डॉ. सोनल जी जैन तथा प्रोफेसर समणी कुसुम प्रज्ञा जी के मार्गदर्शन में ये सत्र अत्यंत प्रभावशाली, प्रेरणादायी एवं लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं।

यह कार्यक्रम केवल एक प्रशिक्षण नहीं, बल्कि गर्भकाल से ही श्रेष्ठ संस्कारों का बीजारोपण करने का एक सशक्त माध्यम है। प्रत्येक माह 1 एवं 15 तारीख को ऑनलाइन प्रशिक्षण सत्र नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। आप अधिक से अधिक संख्या में जुड़कर भावी पीढ़ी के उज्ज्वल, स्वस्थ एवं संस्कारित भविष्य के निर्माण में अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करें।

राष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती अदिति सेखानी 99090 24763

सह संयोजिका

श्रीमती मनीषा बोथरा 83488 22033	श्रीमती श्रेया बाफना 93766 67761	श्रीमती संगीता बाफना (पालघर) 90294 96348	श्रीमती खामोश मेहर 98455 22288
श्रीमती पुष्पा बैद 99343 17221	श्रीमती उषा सिसोदिया 94149 74538	श्रीमती अमिता नाहटा +977 984-1206202	श्रीमती सारिका बागरेचा 80056 05845

फरवरी माह की प्रतियोगिताओं के विजेता रहें:

महिला मंडल QUIZ

Total 1339 Responses

अमिता छाजेड़ (पार्क साइट)
रेखा श्रीश्रीमाल (बालोतरा)
देवसारी बैद (तेजपुर)
शिल्पा बच्छावत (डालखोला)
सुमन सेठिया (हैदराबाद)
मधु छाजेड़ (अहमदाबाद)
कुसुम जैन (कटक)
मंजू सिंघवी (वसई)
अंकिता रांका (आसिंद)
वंदना जैन (पटियाला)

कन्या मंडल QUIZ

Total 451 Responses

जीनल रांका (दौलतगढ़)
हर्षिता बुच्चा (नंदी शाही)
लक्षिता सोलंकी (गांधी नगर)
डिंपल नौलखा (चलथान)
जिनल खतंग (पचपदरा)
ज्ञानिका नाहटा (पूर्वी दिल्ली)
वेदिका जैन (एम. तिरपुर)
हंसिता जैन (साउथ हावड़ा)
प्रिया बंसल (हिसार)
अनुष्का तातेड़ (नोएडा)

युवती विभाग - चित्र चिंतन QUIZ

Total 518 Responses

दीपिका जैन (मदुरई)
गुंजन पुगलिया (साउथ दिल्ली)
हीना चोपड़ा (अहमदाबाद)
खुशबू संचेती (सेलम)
प्रियदर्शिनी जैन (हैदराबाद)
रागिनी कोठारी (मोटेरा)
सीमा बरड़िया (तिरुपुर)
सोनम नाहटा (कटिहार)
सुप्रिया राखेचा (गंगाशहर)
वाणी बोहरा (भिलाई)

विजेताओं को बहुत-बहुत बधाईयां।

सभी विजेताओं से निवेदन है कि कृपया अपना पता संबंधित संयोजिकाओं को WhatsApp कर दें।

विशेष ध्यानार्थ

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल अपनी गौरवशाली 50 वर्षों की ऐतिहासिक यात्रा को डिजिटल एवं फिजिकल स्वरूप में संकलित करने जा रहा है। पिछले 50 वर्षों से संबंधित यदि आपके पास कोई भी जानकारी, दस्तावेज़, छायाचित्र, समाचार-कटिंग, प्रमाण-पत्र अथवा अन्य महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध हो, तो कृपया उसे साझा करें।

इस संबंध में जानकारी हेतु आप श्रीमती सुनीता जैन 98685 16242, श्रीमती मधु देरासरिया 94271 33069 अथवा श्रीमती वीणा बैद 94480 63260 से संपर्क कर सकते हैं। आपका सहयोग इस स्वर्णिम इतिहास के संरक्षण एवं संवर्धन में अमूल्य योगदान सिद्ध होगा।

♦ युवती विभाग-करणीय कार्य ♦

♦ संगम – विराट युवती सम्मेलन ♦

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा युवतियों के सर्वांगीण विकास, आत्मविश्वास एवं सांस्कृतिक चेतना के संवर्धन हेतु "संगम – विराट युवती सम्मेलन" का आयोजन किया जा रहा है।यह भव्य सम्मेलन दिनांक 28 एवं 29 मार्च को लाडनूं (राजस्थान) में पूज्यप्रवर आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में सम्पन्न होगा।यह आयोजन युवतियों के लिए प्रेरणा, व्यक्तित्व विकास, नेतृत्व क्षमता एवं संस्कारों के सुदृढ़ीकरण का एक सशक्त मंच बनेगा, जहाँ देशभर से आई हुई युवतियाँ एक-दूसरे से जुड़कर अनुभव, ऊर्जा और विचारों का संगम करेंगी। अ.भा.ते.म.मं. सभी युवतियों को इस प्रेरणादायी एवं स्मरणीय सम्मेलन का भाग बनने हेतु सादर आमंत्रित करता है।"आओ सखियों, संगम में मिलकर नई प्रेरणा और आत्मविश्वास की ज्योति जलाएँ।"

विशेष सूचना: 45 वर्ष तक की बहनें इस प्रेरक संगम का सहभागी बनने हेतु शीघ्र पंजीकरण करवाएँ और 27 मार्च की संध्या तक लाडनूं पहुँचने की तैयारी सुनिश्चित करें।

राष्ट्रीय संयोजिका

श्रीमती मधु कटारिया 9980443204 श्रीमती अल्का बैद 93527 74011

सह संयोजिका

श्रीमती सोनम बागरेचा 90079 11111 | श्रीमती विनीता बैंगानी 99286 95035 | श्रीमती निर्मला छाजेड़ 94206 11103 | श्रीमती अनीता बरडिया 95004 64089 | श्रीमती पूर्णिमा गादिया 99090 40707 | श्रीमती कुसुम दुगड़ 70141 66119

♦ हमसफ़र ♦

"हमसफर" दाम्पत्य जीवन को सशक्त, संतुलित एवं मूल्यआधारित बनाने की एक प्रेरणादायी पहल है। इस कार्यक्रम के माध्यम से पति-पत्नी के मध्य संवाद, समझ एवं सामंजस्य को सुदृढ़ करने का सतत प्रयास किया जा रहा है। "हमसफर" परिवार को सशक्त बनाकर समाज की स्वस्थ एवं संस्कारित संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

2 सफलतम कार्यशालाएँ इस बात की पुष्टि करती हैं कि यह पहल दाम्पत्य संबंधों को मजबूती देने में अत्यंत प्रभावी है। प्रसिद्ध रिलेशनशिप कोच श्री विकास जी चौधरी के मार्गदर्शन में पति-पत्नी ने संवाद और समझ के नए आयामों को अपनाया है।

इसकी अगली कार्यशाला 21 मार्च को आयोजित की जाएगी। आप सभी अधिक से अधिक संख्या में जुड़कर इस सार्थक पहल का लाभ उठाएँ और अपने दाम्पत्य जीवन को नई सकारात्मक दिशा प्रदान करें।

संयोजिका

श्रीमती कनुप्रिया रांका 98265 35454

सह संयोजिका

श्रीमती नीतू कोठारी 63707 56533 | श्रीमती संतोष वेदमुथा 94498 01954 | श्रीमती संस्कृति जैन 95607 82710 | श्रीमती शिल्पा सुराणा 88860 26364 | श्रीमती रितु गदैया 98292 65097

सहयोगी: श्रीमती शांति वेद, श्रीमती महिमा चौरडिया, श्रीमती शिल्पा बोथरा

चित्र - चिंतन

"Chitra Chintan is open for All age groups for the month of March."

International Women's Day के सुअवसर पर ABTMM का उपहार,
मिले सभी उम्र की महिलाओं/कन्याओं को अभिव्यक्ति का अधिकार।

Google link
https://forms.gle/Rf4Am6yFNTHKktmE7

अन्तर्राष्ट्रीय नारी दिवस नारी के अस्तित्व, अस्मिता, आत्मसम्मान की सुरक्षा के प्रति जन जागृति का सुअवसर है । अपेक्षा है नारी स्वयं भी जागरुक, सचेत, आत्मनिर्भर और साहसी बने । "गलत का हो प्रतिकार और समान मिलें अधिकार" - के बुलन्द स्वर के साथ साथ नारी अपने मौलिक गुणों को, धैर्य और विश्वास को बनाये रखे ।आवश्यकता है सन्तुलन और विवेक की। अगर कदम विकास की ओर बढ़े तो संस्कारों की खनक उनमें बनी रहे, हाथ विश्व को मुट्ठी में करने को तत्पर हों तो उस मुट्ठी में करुणा की नमी भी सनी रहे। नारी प्रकृति की वह कृति है जिसमें शक्ति भी है तो संवेदना भी, सामर्थ्य भी है तो सहनशीलता भी, निर्माण भी है तो विध्वन्स भी।

नारी और नारी के अधिकरों के विषय में आप अपने विचार यहां प्रेषित Google Link के द्वारा Google Form खोलें और संलग्न चित्र के आधार पर 8-10 कव्यात्मक पंक्तियों में प्रेषित करें।अपनी प्रस्तुति को एक सार्थक शीर्षक भी दें।

सूचना :

1. अभिव्यक्ति Google Form के माध्यम से सिर्फ़ हो।
2. प्रविष्टी भेजने की अन्तिम तिथि- 12 March 2026।
3. यह प्रतियोगिता बहनों के चिन्तन और लेखन के सामर्थ्य को और अधिक उर्वर बनाने हेतु किया जा रहा एक लघु प्रयास है।
4. अन्य जिज्ञासा हेतु संयोजिका श्रीमती शिल्पा बैद से 98108 58490 पर Whats app पर Message भेज कर सम्पर्क कर सकते हैं।

आरोहण

◆ *By the girls, for the spirit within* ◆

प्यारी बेटियों, सस्नेह जय जिनेंद्र।

मार्च का महीना अनेक विशेषताओं के साथ हमारे समक्ष उपस्थित है। एक ओर आपकी परीक्षाएँ चल रही हैं, तो दूसरी ओर फागुन का पावन पर्व होली रंगों की उमंग लेकर आ रहा है। इसी माह अध्यात्म जगत के सुमेरु भगवान महावीर की जन्म जयंती भी हमें प्रेरणा देती है। यह महीना संतुलन का संदेश देता है, कर्तव्य और उत्सव, अध्ययन और आध्यात्म, परिश्रम और उत्साह, इन सभी को समभाव से साथ लेकर चलने का। आइए, आध्यात्मिक रंगों से अपने जीवन को सजाकर सच्ची सफलता की ओर अग्रसर हों। इस मार्च माह को बनाएं सुरक्षा, साधना, स्वाध्याय और सफलता का माह। बेटियों, निरंतर प्रगति, साधना और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते रहना ही हमारी पहचान है। सफलता तुम्हारे कदम चूमे, यही मंगलकामना।

कन्या मंडल संयोजिका
श्रीमती हेमा चोरड़िया
98102 81155

कन्या मंडल सह संयोजिका
श्रीमती जयश्री जोगड
90280 84801

अंतरराष्ट्रीय सह संयोजिका
सुश्री जागृति छाजेड, काठमांडू
+977 98186 78503

◆ कन्या मंडल-करणीय कार्य ◆

LIFESTYLE LAB

The Art of Public Speaking & Smart Dressing Tips

Stage fear को करो disappear, Confidence हो loud & clear.
Voice हो smart, tone हो strong, Body language बोले "I belong."
Dress sharp, look bright, Personality shine करे in every spotlight.
Speak with power, lead the way हर stage को own it your way.

Speak with impact. Present with confidence and leave a long-lasting impression.

हमें हर्ष है कि जयपुर से renowned Image Consultant एवं Public Speaking Coach Ms. Khusboo Karnawat 21 मार्च, शनिवार रात्रि 8:30 से 9:30 बजे तक ज़ूम पर इस विषय पर प्रेरणादायी सत्र प्रदान करेंगी।

JAINISM IN GENZ

पंच परमेष्ठी गीतिकाओं के कंठस्थ का क्रम निरंतर जारी रखें। अधिवेशन तक प्रत्येक क्षेत्र से कम से कम दो बेटियों को ये गीत अवश्य कंठस्थ हों, यह हमारा सामूहिक संकल्प रहे।

संक्षिप्त रिपोर्ट

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में कन्या मंडल द्वारा विविध रचनात्मक, बौद्धिक एवं संगठनात्मक गतिविधियाँ सफलतापूर्वक संपन्न की जा रही हैं। उनका क्रमबद्ध विवरण इस प्रकार है-

उपनिषद (तृतीय चरण)-"उपनिषद- दो पीढ़ियों का मिलन" के तृतीय चरण को बेटियों ने अत्यंत उत्साह एवं जिम्मेदारी के साथ संपन्न किया। लगभग 100 क्षेत्रों से 100 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं, जो सक्रिय सहभागिता का प्रमाण हैं।

गुरु इंगित पंच परमेष्ठी गीतिका- पंच परमेष्ठी गीतिकाओं को शीघ्र कंठस्थ करने वाली सभी बेटियों के प्रति सात्विक गर्व की अनुभूति हो रही है। विभिन्न क्षेत्रों की अनेक बेटियों ने उत्साह, समर्पण एवं लगन के साथ इस क्रम में उल्लेखनीय तत्परता दिखाई है।अन्य अनेक बेटियाँ भी निरंतर तैयारी में संलग्न हैं - आप सभी को हार्दिक साधुवाद एवं शुभकामनाएँ।

ऑनलाइन संगठन यात्रा- 24 जनवरी को ज़ूम के माध्यम से सेंट्रल ज़ोन (महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश) की 'क्षेत्र सार संभाल' सफलतापूर्वक आयोजित की गई, जिसमें बेटियों की सक्रिय सहभागिता रही।

"मुझे गर्व है, मैं जैन तेरापंथी हूँ"- वीडियो अभियानजनवरी माह में राष्ट्रीय अध्यक्ष, पदाधिकारीगण एवं कन्या मंडल की बेटियों द्वारा लघु वीडियो तैयार किए गए। प्रतिदिन तीन वीडियो इंस्टाग्राम पर साझा कर संगठन के विचारों का व्यापक प्रसार किया गया।

स्मार्ट किचन वेबिनार- 8 फरवरी को आयोजित वेबिनार में डॉ. सारिका गिड़िया जी ने घरेलू सामग्री से स्वस्थ त्वचा, संतुलित आहार एवं प्राकृतिक सौंदर्य के उपाय साझा किए। 550 से अधिक बेटियों की सहभागिता उल्लेखनीय रही।(रिकॉर्डिंग लिंक उपलब्ध)

पेंटिंग प्रतियोगिता- परिणाम घोषणाआचार्य श्री तुलसी के जीवन-वृत्त पर आधारित पेंटिंग प्रतियोगिता के परिणाम हर्ष के साथ घोषित किए गए। बेटियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति, आध्यात्मिक भाव एवं कलात्मक कौशल अत्यंत सराहनीय रहे। परिणाम इस प्रकार हैं-

Out of the Box Achievers- भुज, **Golden Crown Award-** रायपुर, **Silver Star Award-** कालू, भीनासर, उदासर, चिखली, **Path Breaker Award-** कटक, पूर्वांचल कोलकाता, पालघर, **Royal Runner-Up Award-** नागपुर, बीकानेर, कांकरोली, दौलतगढ़, गांधीधाम, डूंगरी, कालू, **Rising Star Award-** नोखा, उत्तर हावड़ा, साउथ हावड़ा। सभी विजेताओं एवं प्रतिभागी बेटियों को हार्दिक बधाई।

क्रॉसवर्ड पज़ल प्रतियोगिता- आचार्य भिक्षु के जीवन पर आधारित तेरापंथ प्रबोध से संबंधित क्रॉसवर्ड पज़ल में बेटियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपने ज्ञान का विस्तार किया।

Best Shakha of the Quarter

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

सत्र 2025–2027 के प्रथम त्रैमासिक कार्य रिपोर्ट के आधार पर

अखिल भारतीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ शाखाएं

महानगर	गांधीनगर बेंगलुरु	
नगर	जयपुर सी–स्कीम किलपॉक	
शहर	उधना राजराजेश्वरी नगर काठमाण्डू	
कर्नाटक तमिलनाडु केरल आन्ध्रप्रदेश	चिकमगलूर	ग्राम
कर्नाटक तमिलनाडु केरल आन्ध्रप्रदेश	सेलम दावनगिरी मदुरै	कस्बा
राजस्थान	नोखा आसीन्द श्रीडूंगरगढ़	ग्राम
राजस्थान	जसोल, धोइन्दा भीनासर, दौलतगढ़ पचपदरा	कस्बा
महाराष्ट्र	पालघर पुणे जलगांव	ग्राम
महाराष्ट्र	शिरपुर, एलफिंस्टन, बदलापुर, बोइसर	कस्बा
गुजरात मध्य प्रदेश छत्तीसगढ	वापी कामरेज	ग्राम
गुजरात मध्य प्रदेश छत्तीसगढ	डूंगरी, वीजापुर, भिलोड़ा, केसुर	कस्बा
नेपाल पश्चिम बंगाल मेघालय सिक्किम नागालेण्ड	साल्टलेक धुबड़ी	ग्राम
नेपाल पश्चिम बंगाल मेघालय सिक्किम नागालेण्ड	बेलडांगा, गौरीपुर, धुलाबाडी, इस्लामपुर, गुस्कारा	कस्बा
हरियाणा दिल्ली उत्तर प्रदेश पंजाब	फरीदाबाद	ग्राम
हरियाणा दिल्ली उत्तर प्रदेश पंजाब	कालांवली, हिसार, भिवानी, पटियाला	कस्बा
बिहार झारखण्ड ओडिशा	भुवनेश्वर	ग्राम
बिहार झारखण्ड ओडिशा	बंगोमुण्डा कटिहार बालासोर	कस्बा

पंच परमेष्ठि गीतिकाओं का प्रेरणादायी कंठस्थ अभियान

आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा नव वर्ष के उपलक्ष्य में 'पंच परमेष्ठि' गीतिकाओं को कंठस्थ करने हेतु जो दिशानिर्देश एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया, उसे क्रियान्वित करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने इन गीतिकाओं को कंठस्थ कराने का संकल्प ग्रहण किया।

इस प्रयास में महिला मंडल, युवती विभाग तथा कन्या मंडल की सहभागिता अत्यंत प्रेरणादायी रही। सभी बहनों और कन्याओं ने श्रद्धा, उत्साह एवं आत्मविश्वास के साथ भाग लेकर प्रतियोगिता को गरिमामय स्वरूप प्रदान किया। उनकी सक्रिय उपस्थिति और सामूहिक ऊर्जा ने इस उपक्रम को सचमुच यादगार बना दिया तथा पूज्य प्रवर की प्राचीन गीतिकाओं के पुनरुद्धार के स्वप्न को साकार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस महत्वाकांक्षी एवं प्रेरणादायी उपक्रम में सहभागिता निभाने वाली प्रतिभागिनियों के नाम निम्नलिखित हैं-

महिला मंडल

अंजना गोखरू	आसिंद	चेतना कर्णावत	नाथद्वारा	सरिता सामसुखा	दक्षिण हावड़ा	खुशबू कोठारी	वापी
नीलम रांका	दौलतगढ़	बॉबी जैन	कांटाबांजी	संगीता कोठारी	चिकमंगलोर	लता डाक	चलथान
संतोष	उचाना मंडी	किरण दुगड़	भीलवाड़ा	पुष्पा देवी	जसोल	भावना पुनामिया	सेमाड
हेमलता बरडिया	श्री डूंगरगढ़	प्रेम बिनायक	राजलदेसर	जयश्री बरडिया	बालोतरा	भावना देवी लुंकर	बालोतरा
शांता भूरा	बीकानेर	विद्या बांठिया	दक्षिण हावड़ा	रीमा घिया	अहमदाबाद	दिवाली देवी छाजेड़	बालोतरा
सरिता बेगवानी	अररिया कोर्ट	सुखमल सामसुखा	दक्षिण हावड़ा	सरोज सिंघी	बोंगाईगांव दक्षिण	मोनिका सेठिया	भीनासर
सुनीता सुराना	बिराटनगर	संगीता बोथरा	बालोतरा	मीना बाबेल	भीलवाड़ा	नीता कटरेला	जयनगर
स्नेहलता सेठिया	वडोदरा	कोकिला कुंडलिया	उत्तर हावड़ा	सुमन लोढ़ा	भीलवाड़ा	लक्ष्मीजी गेल्डा	शहादा
सुनीता गोखरू	आसिंद	लक्ष्मी भटेवरा	मैसूर	रेखा आच्छा	देवगढ़	रीना बापना	भीलवाड़ा
सुशीला महनोत	उदासर	विनीता दफ्तरी	किशनगंज	कुसुम बरमेचा	वडोदरा	रतन देवी वागरेचा	वापी
ललिता मेहता	जसोल	ललिता चोपड़ा	पंचपदरा	फैंसी आच्छा	चिक्कमगलूर	प्रियंका बैद	मालदा
पुषा देवी पारख	नोखा	उषा सिंघवी	बोरीवली	विभा अंचलिया	नोखा	मोहिनी देवी संकलेचा	जसोल
पारस देवी बडोला	दोलतगढ़	अर्चना संचेती	बोरीवली	सरोज बोहरा	वापी	सरस्वती कटारिया	बैंगलोर
सीमा दुगड़	जयपुर	अंजू चपलोत	उधना	लीला देवी मरोठी	नोखा	सरोज बैद	तेजपुर
मैना देवी नौलखा	दोलतगढ़	रेखा बाफना	भीलवाड़ा	चंद्रकला दुगड़	कालू	सुषमा सालेचा	बालोतरा
सुमित्रा सेठिया	बिलासीपारा	सुनीता आच्छा	देवगढ़	गीता श्रीमाल	वडोदरा	मैना कांथर	भीलवाड़ा
विमला शंखलेचा	टपरा	सुमित्रा आच्छा	देवगढ़	संगीता राखेचा	गांधी नगर	निर्मला जी मेहता	वापी
करुणा भंसाली	वडोदरा	मीरा बरडिया	वडोदरा	प्रेरणा बाफना	बारडोली	पूजा चबड़िया	उल्हासनगर
शकुंतला मरोठी	जोरावरपुरा	चंडाल चोपड़ा	बालोतरा	सरोज बोथरा	बैंगलोर	कनक भंसाली	काठमांडू
मंजू भंसाली	हैदराबाद	ममता खटंग	पंचपदरा	विमला लुंकर	बालोतरा	निरंजना	दालखोला
राजकुमारी मरोठी	नोखा	विजया चोपड़ा	पंचपदरा	चंद्रकला कोचर	दक्षिण हावड़ा	गीता देवी छाजेड़	बालोतरा
गुलाब डागा	हावड़ा	भारती डागा	तमिलनाडु	सुमन मालू	गुवाहाटी	चंद्रा सालेचा	बालोतरा
संगीता चपलोत	बोईसर	संगीता चोरडिया	भीलवाड़ा	वीना बोथरा	वापी	सुकी बाई डागा	हनुमंतनगर
ललिता अंबानी	सूरत	सुधा मेहता	राजसमंद	सूरज पुगालिया	करीमगंज	सुशीला गोखरू	ब्यावर
राजकुमारी मरोठी	नोखा	कविता सालेचा	बालोतरा	विद्या देवी सेठिया	दक्षिण हावड़ा	कांता चोरडिया	दक्षिण कोलकाता
		सरला भूतोड़िया	हैदराबाद			सुषमा गुलगुलिया	बेरहामपुर

कन्या मंडल

साक्षी रांका	दौलतगढ़	रितु सांड	कालू	चंचल नखत	सरदारशहर	नम्रता सुखलेचा	नोखा
जिनल रांका	दौलतगढ़	अंतिमा नखत	सरदारशहर	भाग्यश्री महनोत	उदासर	भूमिका सांड	कालू
हेतल नोलखा	दौलतगढ़	पूजा सांड	कालू	श्रेया बडोला	बारडोली	याशी टाटेड	हासनस
गरिमा भंसाली	गंगाशहर	आंचल हिरावत	अररिया	समता गंग	राजलदेसर	लोनी कोठारी	किशनगढ़
हर्षा सांड	कालू	श्रुति गोखरू	आसींद	मानसवी सेठिया	फरीदाबाद	श्रद्धा गोखरू	आसींद

युवती विभाग

अलका ढेलरिया	सूरत	वंदना संक्लेचा	सूरत	मीना मेढ़तवाल	वाशी	अंकिता कोठारी	कमोठे
दीपिका फुलफगर	मदुरई	ममता जैन	केलवा	निर्मला चोरड़िया	जलगांव	प्रियंका बैद	पूर्वांचल
चेतना चपलोत	बोरीवली	श्रद्धा दुगड़	भिलोड़ा	करिश्मा बाफना	शिरपुर	सुनीता जैनसवाई	माधोपुर
मीनू बोथरा	नागपुर	सुनिता सुराणा	बिराटनगर	शीतल सांघवी	अंधेरी	विनीता बैद	पर्वत पाटिया
रेखा जैन	उचाना मण्डी	रानू रांका	दोलतगढ़	रानी बाफना	बालोतरा	अंकिता चावत	पांडेसरा
अंजू नौलखा	दोलतगढ़	मोनिका भंसाली	हैदराबाद	करिश्मा बाफना	शिरपुर	एकता संचेती	काठमांडू
सीमा डांगी	उधना	कोमल बोराना	बोईसर	ख़ुशबू कुण्डलिया	बिराटनगर	ममता खटांग	पचपद्रा
रीना बैद	राजेलदेसर	रितु जैन	उचाना मण्डी	रंजिता बाफना	नाथद्वारा	मिनाक्षी जैन	बिराटनगर
अनिता छाजेड़	अहमदाबाद	नयनतारा	नाहर देशनोक	हिना संकलेचा	सूरत	प्रियंका आंचलिया	नागपुर
मनीषा डागा	सिलीगुड़ी	रीना खाब्या	सांताक्रूज़	रेखा लुक्कड़	बालोतरा	राजू सेठिया	पर्वत पाटिया
दक्षा श्रीमाल	वडोदरा	ममता मेहता	वडोदरा	ममता लोढ़ा	भायंदर	पूजा चोपड़ा	लुधियाना
किम्मी सिंघी	साल्ट लेक	निशिता डक	भीलवाड़ा	उषा हिरण	इरोड़	सुमन खटेड़	गुरुग्राम
मोनिका सिंघवी	दक्षिण मुंबई	मधु बांठिया	पाली	संगीता बोर्डिया	डीसा	रेखा रांका	बालोतरा
लीला चावत	बीजापुर	रुचि छाजेड़	गंगाशहर	सोनू चोरड़िया	वड़ोदरा	प्रियंका बाफना	घाटकोपर
एकता बोर्डिया	सूरत	सोना चोपड़ा	मदुरई	नगीना मेहता	डोंबिवली	विनिता पुगलिया	दक्षिण हावड़ा
दीपिका छल्लानी	मध्य दिल्ली	अंजू बैद पूर्वी	दिल्ली	ऋचा भंडारी	वड़ोदरा	ममता बोहरा	बोरीवली
मनीषा बोथरा	सिलीगुड़ी	शालू भूरा जैन	जयपुर शहर	सीए प्रेरणा कोठारी	तिरपुर	ख़ुशबू पिंचा	पर्वत पाटिया
कृतिका कोचर	जयपुर शहर	प्रियादर्शनी जैन	हैदराबाद	ख़ुशबू छाजेड़	कटिहार	सपना गादिया	चिकमंगलूर
सपना संखलेचा	जसोल	विजयश्री ललानी	जलगांव	प्रियंका बैद	विजयवाड़ा	कोमल जैन	किशनगढ़
शिल्पा सेठिया	धुबड़ी	संगीता बाफना	डीसा	नीलम बलार	बालोतरा	ममता बैद	पूर्वांचल
भारती जैन	उचाना मण्डी	रेखा भंडारी	बालोतरा	कल्पना सांड	कालू	नयना सुराणा	दक्षिण हावड़ा
मोनिका छाजेड़	श्री डुंगरगढ़	भावना पटावरी	चेम्बूर	मधु कटारिया	आर आर नगर	ख़ुशबू श्यामसुखा	पूर्वांचल कोलकता
अनुपमा बोथरा	मदुरई	पुष्पा सोनी	नवी मुम्बई	संतोष कांकरिया	अहमदाबाद	प्रियंका भुतोड़िया	कानपुर
लता सिंघी	साल्ट लेक	प्रीती डागा	बिराटनगर	ममता चिप्पड़	गोरेगांव	वर्षा डागा	रायपुर
निहारिका नाहटा	धुबड़ी	लीना वेदमुथा	पाली	चंदा कोठरी	भायंदर	पिंकी गुंडेचा	खारघर
करिश्मा कोठारी	कामरेज	वीरल श्रीमल	वडोदरा	कामिनी जैन	सवाई माधोपुर	रीना कावड़	बालोतरा
प्रेरणा बोथरा	पर्वत पाटिया	प्रीती बाडोला	राजसमंद	सुविधा देवड़ा	शिरपुर	ममता मेहता	जसोल
दीपिका नाहटा	पूर्वी दिल्ली	मिनाक्षी जैन	सरदारपुरा	स्वाति भंडारी	गांधीनगर	पूजा वेदमुथा	कोयम्बतूर
डॉ बनिता सुराणा	पूर्वी दिल्ली	पूजा भटेरा	खारघर	निशा पटावरी	कटिहार	रविना सेठिया	पूर्वी दिल्ली
ममता जैन	डूंगरी	बीनल बाफना	घाटकोपर	पूजा मालू उत्तर	हावड़ा	नगीना मेहता	डोंबिवली
प्रभा लूनिया	बोंगाईगांव	कविता चिंडालिया	अहमदाबाद	श्वेता घिया उत्तर	हावड़ा	ममता लोढ़ा	भायंदर
सोनिया जैन	उचाना मण्डी	कला जीरावाला	अहमदाबाद	पूजा दुग्गड़	पूर्वांचल कोलकता	कीर्ति चोपड़ा	पचपद्रा
अंकिता कावड़िया	भीलवाड़ा	रेशम बाँठिया	नोएडा	दिव्या बांठिया	गुरुग्राम	बंटी जैन सवाई	माधोपुर
प्रियंका बैद	दक्षिण कोलकता	ख़ुशबू सेठिया	फरीदाबाद	गुणवंथी बोहरा	कोयम्बतूर	ममता जैन	केलवा
कुसुम जैन	जिंद	रीना सिंघवी	खारघर	वंदना सुराणा	भायंदर	सुमित्रा कोठरी	सांताक्रूज़
सोनू सेठिया	वडोदरा	हर्षा लोढ़ा	खारघर	सिद्धि भँसाली	वड़ोदरा	कामिनी जैन	सवाई माधोपुर
रचना हिरण	डूंगरी	पुष्पा सोनी	खारघर	हिमांशु सेठिया	जलगाँव	नेहा जैन	गंगाशहर
अलका दफ़्तरी	किशनगंज	अभिरुचि चपलोत	राजनगर	पूजा पुगलिया	लुधियाना	पूजा कांठेड़	घाटकोपर
ज्योती पगारिया	पूर्वी दिल्ली	सौरभ बरमेचा	दक्षिण मुंबई	प्रीति सिंघवी	डोंबिवली	रुचिका तातेड़	बालोतरा
नम्रता जैन	इंदौर	पूजा कोठारी	भीलवाड़ा	राजुल दुग्गड़	हैदराबाद	प्रिया सामसुखा	लुधियाना
हेमा सिंघवी	सूरत	गुलाबी महनोत	उदासर	समता रांका	गांधीनगर	सोनम तातेड़	बैंगलोर
प्रिया बैद	जयपुर सी स्कीम	विभा धोका	बांद्रा	खुशबू भंसाली	अहमदाबाद	रेखा देवी लुंकड़	बालोतरा
सोनिया विनय जैन	उचाना मण्डी	आशा चोपड़ा	पाली	मनीषा चोपड़ा	अहमदाबाद	सपना दुग्गड़	भीलवाड़ा
जसोदा संकलेचा	जसोल	सपना जैन	कांताबंजी	पूर्णिमा चंडालिया	वडोदरा	पूजा वैदमुठा	कोयंबतूर
सूचि पुगलिया	भीनासर	बिंदिया जैन	कांताबंजी	ज्योति सामसुखा	दक्षिण हावड़ा	भावना लोढ़ा	धोइंदा
सपना बैद	भुबनेश्वर	कुलदीपा कुमठ	चेम्बूर	कल्पना चोरड़िया	गोरेगांव	जीनल डूंगरवाल	राजनगर
निक्की दुगड़	कालू	कौशल्या जैन	जयपुर शहर	निशा डागा	भायंदर	सोनू बोथरा	नोखा
						कल्याणी जैन	पंचकुला

मर्यादा क्वेस्ट

◆ संपूर्ण भारत और नेपाल के शाखा मंडलों के लिए ◆

चलो खोजें मर्यादा का मर्म

प्रतियोगिता नियमावली एवं निर्देश

यह प्रतियोगिता केवल ज्ञान की परीक्षा नहीं, बल्कि तेरापंथ की मर्यादाओं के प्रति हमारी सजगता (Awareness) और साधना को सुदृढ़ करने का एक उपक्रम है।

टीम का गठन (Team Formation)

- **सदस्य संख्या:** प्रत्येक टीम में अनिवार्य रूप से **3 से 5 सदस्य** होंगे।
- **टीम का नामकरण:** प्रत्येक टीम अपना नाम तेरापंथ के आचार्यों, महासतियों या संघ के गौरवशाली इतिहास से जुड़े किसी शब्द पर रखा जा सकता है। (जैसे- भिक्षु टीम, जय टीम, महाप्रज्ञ टीम आदि)।
- **नेतृत्व:** प्रत्येक टीम अपना एक **'टीम लीडर'** चुनेगी, जो अंतिम उत्तर देने के लिए अधिकृत होगा।

सामान्य नियम एवं अनुशासन

- **प्रमाणिक स्रोत:** किसी भी विवाद की स्थिति में **'श्रावक संदेशिका'** और **'मर्यादा पत्र'** में लिखे शब्दों को ही अंतिम सत्य माना जाएगा।
- **डिजिटल वर्जना:** प्रतियोगिता के दौरान किसी भी टीम को मोबाइल फोन, गूगल या इंटरनेट का उपयोग करने की अनुमति नहीं है।
- **निर्णायक का निर्णय:** निर्णायक मंडल (Jury) का निर्णय अंतिम और सर्वमान्य होगा। किसी भी प्रकार की बहस प्रतियोगिता से निष्कासन (Disqualification) का कारण बन सकती है।
- **समय बद्धता:** निर्धारित समय के बाद दिया गया उत्तर मान्य नहीं होगा।

आयोजन हेतु आवश्यक सामग्री

1. बजर (Buzzer) या घंटी।
2. स्टॉपवॉच (समय मापने के लिए)।
3. स्कोर बोर्ड (मार्कर और बोर्ड)।
4. श्रावक संदेशिका की एक संदर्भ प्रति (Reference Copy)।

आयोजक संस्था के लिए ज्ञातव्य

प्रश्न-सूची प्राप्त होने के बाद तीन दिनों में इस प्रतियोगिता को आयोजित कर लें।

Round 1: "मैं कौन सी मर्यादा हूँ?" पहेलियाँ (बजर राउंड) +10 अंक, 15 सेकंड

- **स्वरूप:** यह एक 'रैपिड फायर' या बजर राउंड होना चाहिए।
- **नियम:** संचालक संकेत पढ़ना शुरू करेगा। टीम को उत्तर देने के लिए बजर दबाना होगा।
- **अंक:** सही उत्तर पर +१० अंक। गलत उत्तर पर -५ अंक।
- **समय:** संकेत समाप्त होने के बाद १५ सेकंड के भीतर उत्तर देना अनिवार्य है।

पहेली 1:

- मैं प्रति सप्ताह एक खास दिन और खास समय पर आती हूँ।
- मेरे दौरान मोबाइल का स्पर्श भी वर्जित है।
- मेरा आयोजक कोई संस्था नहीं, बल्कि पूरा धर्मसंघ है।

उत्तर: शनिवार की सामायिक

पहेली 2:

- मैं बोतलों में बंद होकर आती हूँ और दिखने में निर्मल हूँ।
- 'फ़िल्टर' होने का दावा करती हूँ, पर मर्यादा की दृष्टि में 'संदेहास्पद' हूँ।
- इसलिए मुझे 'सचित्त' की कोटि में माना गया है।

उत्तर: मिनरल वाटर (Mineral Water), बोतलबंद फ़िल्टर वाटर

पहेली 3:

- यदि आप किसी संघीय संस्था में अध्यक्ष या मंत्री बनना चाहते हैं, तो मुझसे गुजरना होगा।
- मैं वह अनिवार्य त्याग हूँ जो एक विशिष्ट प्रकार के भोजन से दूरी सुनिश्चित करता है।
- मेरे पालन के बिना कोई साधारण सदस्य रहने योग्य भी नहीं माना जाता।

उत्तर: मद्य-मांस त्याग की मर्यादा (पदाधिकारी हेतु अर्हता)

पहेली 4:

- मैं दूध से बनी हूँ, पर मैं दूध नहीं हूँ।
- मैं 'मिष्ट' (मीठी) नहीं हूँ, फिर भी विगय की श्रेणी में आती हूँ।
- मेरा रंग सफेद है।

उत्तर: दही

पहेली 5:
- मैं वह संकल्प हूँ जो आचार्य भिक्षु की परंपरा को जीवित रखता है।
- मैं दलबंदी को प्रोत्साहन नहीं देने और संघ की अखंडता के प्रति जागरूक रहने की शपथ हूँ।
- मैं 'टाळोकर' (संघ मुक्त) व्यक्तियों को प्रश्रय देने से रोकती हूँ।

उत्तर: श्रावक-निष्ठा-पत्र

पहेली 6:
- मैं 60 वर्ष की आयु पार कर चुके श्रावकों के लिए एक विशेष आध्यात्मिक सोपान हूँ।
- मेरे लिए कम से कम पांच वर्ष तक बारह व्रत की साधना अनिवार्य है।
- मुझमें शरीर पर कोई भी आभूषण (अंगूठी, हार आदि) धारण करना वर्जित है।

उत्तर: सुमंगल साधना

पहेली 7:
- मैं सम्यक्त्व दीक्षा का एक प्रमुख हिस्सा हूँ।
- मुझे विशेष परिस्थितियों के सिवाय प्रतिदिन कम से कम 21 बार दोहराना चाहिए।
- मैं सब मंगलों में प्रधान हूँ।

उत्तर: नमस्कार महामंत्र

पहेली 8:
- मैं तेरापंथ भवन की दीवारों पर कभी नहीं दिखूँगा।
- यहाँ भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु और वर्तमान आचार्य के चित्र तो हो सकते हैं, पर मेरा प्रवेश वर्जित है।
- मैं एक प्रकार का चित्र हूँ।

उत्तर: गृहस्थ का फोटो

पहेली 9:
- साधारण अवस्था में शाक-भाजी और फल 'सचित्त' (सजीव) माने जाते हैं।
- लेकिन यदि आप मुझे इस आधुनिक मशीन (उपकरण) में गर्म कर दें, तो मैं 'अचित्त' हो जाती हूँ।
- मैं रसोइघर का एक आधुनिक हिस्सा हूँ।

उत्तर: माइक्रोवेव (Microwave)

पहेली 10:
- मैं तपस्या का एक रूप हूँ जिसमें भोजन केवल एक बार किया जाता है।
- मेरी मर्यादा है कि मेरा समय अधिकतम 1 घंटा ही रह सकता है।
- यदि 1 घंटे से अधिक समय लिया जाए, तो मैं अपनी मर्यादा खो देती हूँ।

उत्तर: एकासन

पहेली 11:
- मैं वह जादुई संख्या (उम्र) हूँ जिसके बिना आप महासभा या सभा के सदस्य नहीं बन सकते।
- इस आयु को पार करने के बाद ही श्रावक-श्राविका को संघीय संस्थाओं में अधिकार मिलता है।

उत्तर: 18 वर्ष की आयु

पहेली 12:
- मेरी श्रेणी में भुजिया, कचोरी और समोसा जैसे चटपटे व्यंजन आते हैं।
- मुझे घी या तेल में तलकर तैयार किया जाता है।
- मैं एक प्रकार की विगय कहलाती हूँ।

उत्तर: कड़ाही-मिश्रित विगय

पहेली 13:
- मैं पौषध और सामायिक साधना का एक अनिवार्य हिस्सा हूँ।
- मेरे माध्यम से श्रावक अपने वस्त्रों और उपकरणों की जाँच करता है ताकि सूक्ष्म जीवों की रक्षा हो सके।
- दृष्टि और हाथ के उपयोग से मैं जीव-हिंसा को रोकती हूँ।

उत्तर: वस्त्र/उपकरण प्रतिलेखन

पहेली 14:
- मैं वह संख्या हूँ जो संघीय अधिवेशनों और शिविरों के भोजन में सादगी लाती है।
- 'श्रावक संदेशिका' के अनुसार, भोजनालयों में मुझ से अधिक वस्तुओं का प्रयोग वर्जित है।

उत्तर: 13 द्रव्य की मर्यादा

पहेली 15:
- मैं वह आदरसूचक शब्द हूँ जो श्रावक सामान्य चारित्रात्माओं के लिए प्रयोग करते हैं।
- मेरा अर्थ है 'मस्तक से वंदन करना'।
- मैं आचार्य, युवाचार्य और साध्वीप्रमुखा के लिए प्रयुक्त 'वन्दे' शब्द से भिन्न हूँ।

उत्तर: मत्थएण वंदामि

पहेली 16:
- मेरी श्रेणी में आलू, प्याज और गाजर जैसे पदार्थ आते हैं।
- मेरा त्याग करने वाले को मेरा 'पाउडर' या 'पेस्ट' भी नहीं चखना चाहिए।
- यदि किसी तेल में मुझे तला गया हो, तो वह तेल भी मेरे त्यागी के लिए वर्जित हो जाता है।

उत्तर: जमींकन्द

पहेली 17:
- मैं वह समय अंतराल हूँ जो सचित्त को अचित्त में बदलने की क्षमता रखता है।
- यदि दो शाक के रसों को मिलाया जाए या नींबू की शिकंजी में पानी डाला जाए, तो मेरी प्रतीक्षा करनी पड़ती है।
- मुझे पार करने के बाद ही वह पदार्थ चारित्रात्माओं के लिए कल्पनीय होता है।

उत्तर: 12 मिनट की मर्यादा

पहेली 18:
- मैं कालधर्म प्राप्त साधु-साध्वियों की स्मृति में बनाया जाने वाला स्थल हूँ।
- मेरी रचना में 'छतरी' बनाना सर्वथा वर्जित है।
- मुझ पर किसी गृहस्थ का रचित गीत या विचार अंकित नहीं किया जा सकता।

उत्तर: स्मारक या चबूतरा

पहेली 19:
- मैं संघ की व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने वाला नियम हूँ।
- मैं यह सुनिश्चित करता हूँ कि एक ही व्यक्ति कई संस्थाओं पर अधिकार न जमाए।
- यदि कोई दो पदों पर चुन लिया जाए, तो उसे तीन महीने में एक पद छोड़ना पड़ता है।

उत्तर: एक व्यक्ति, एक पद व्यवस्था

पहेली 20:
- "मैं वह मर्यादा हूँ जो ज्ञान के साधनों को किसी की निजी संपत्ति नहीं बनने देती।
- चाहे किसी ने कितनी भी मेहनत से कोई ग्रंथ या लेख लिखा हो, मैं उस पर व्यक्तिगत अधिकार जताने से रोकती हूँ क्योंकि सब कुछ 'गण' का है ।"

उत्तर: गण के पुस्तक-पन्नों पर अधिकार न करना (मर्यादा ११)

पहेली 21:
- "मैं वह मर्यादा हूँ जो साधुत्व में सत्ता या ओहदे की दौड़ को समाप्त करती हूँ।
  मैं किसी भी साधु या साध्वी को संघ में किसी विशेष पद के लिए 'उम्मीदवार' (Candidate) बनने से सख्ती से मना करती हूँ ।"

उत्तर: पद के लिए उम्मीदवार न बनना (मर्यादा १३)

पहेली 22:
- "मैं वह मर्यादा हूँ जो संघ से अलग हुए व्यक्तियों के साथ मेल-जोल को नियंत्रित करती हूँ।
  यदि कोई व्यक्ति गण से बहिष्कृत या अलग हो चुका है, तो मैं उनके साथ आध्यात्मिक संपर्क या 'संस्तव' रखने पर रोक लगाती हूँ ।"

उत्तर: बहिष्कृत व्यक्ति से संस्तव न करना (मर्यादा १२)

Round 2: "मर्यादा पत्र क्विज़" तथ्यात्मक (सीधा सवाल)+10 अंक, 30 सेकंड

- **स्वरूप:** प्रत्येक टीम से एक सीधा तथ्यात्मक सवाल पूछा जाएगा।
- **नियम:** प्रश्न का उत्तर ३० सेकंड में देना होगा। यदि टीम उत्तर नहीं दे पाती, तो प्रश्न अगली टीम को 'पास' किया जा सकता है।
- **अंक:** सीधा सही उत्तर देने पर +10 अंक, पास होने पर सही उत्तर देने वाली टीम को +5 अंक।

प्रश्न 1: 'श्रावक संदेशिका' को तेरापंथ के श्रावक-श्राविकाओं के लिए किस रूप में देखा जा सकता है?
उत्तर: श्रावक संदेशिका तेरापंथ के श्रावक-श्राविकाओं के लिए एक 'संविधान' (Constitution) की भूमिका अदा कर सकती है।

प्रश्न 2: यदि किसी साधु-साध्वी में कोई दोष या गलती दिखाई दे, तो मर्यादा के अनुसार उसकी सूचना किसे देनी चाहिए और क्या सावधानी बरतनी चाहिए?
उत्तर: वह दोष तत्काल संबंधित व्यक्ति या आचार्य को बता देना चाहिए, लेकिन उसका बाहर प्रचार नहीं करना चाहिए और न ही दोषों को चुन-चुनकर इकट्ठा करना चाहिए ।

प्रश्न 3: संघ की अखंडता के लिए श्रावक को किसके प्रति समर्पित रहने का संकल्प लेना होता है?
उत्तर: आचार्य भिक्षु की मर्यादा, तेरापंथ धर्मसंघ तथा शासनपति (आचार्य) के प्रति समर्पित रहना होता है।

प्रश्न 4: जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज का सर्वोच्च विचार-निर्णय मंच (Highest decision-making body) कौन सा है?
उत्तर: कल्याण परिषद् (Kalyan Parishad)।
प्रश्न 5: कल्याण परिषद् के किसी भी निर्णय को लागू करने के लिए किसकी अनुमति या अनुमोदन अनिवार्य है?
उत्तर: आचार्यप्रवर (Acharya) की अनापत्ति अथवा अनुमोदना अनिवार्य है।
प्रश्न ६ : 'शिष्य' बनाने के अधिकार के संबंध में तेरापंथ की मर्यादा क्या स्पष्ट करती है?
उत्तर: कोई भी साधु या साध्वी अपने व्यक्तिगत शिष्य नहीं बनाए; सभी सदस्य एक ही आचार्य की आज्ञा में रहे।
प्रश्न ७: तेरापंथ के मौलिक नियमों के अनुसार, यदि आचार्य अपने किसी गुरु-भाई या शिष्य को 'उत्तराधिकारी' (Successor) चुनते हैं, तो संघ के सदस्यों का क्या कर्तव्य है?
उत्तर: सभी साधु-साध्वियों को उन्हें सहर्ष स्वीकार करना चाहिए ।
प्रश्न 8: मर्यादाओं के संदर्भ में 'टाळोकर' (संघ से मुक्त व्यक्ति) के प्रति श्रावक की क्या मर्यादा निश्चित की गई है?
उत्तर: श्रावक को धर्मसंघ से मुक्त व्यक्ति (टाळोकर) को प्रश्रय (आश्रय/समर्थन) नहीं देना चाहिए।
प्रश्न 9: 'श्रावक संदेशिका' के निर्देशों का अतिक्रमण होने पर श्रावक के लिए क्या प्रावधान रखा गया है?
उत्तर: अवांछनीय अतिक्रमण होने पर अतिक्रमणकर्ता व्यक्ति यथोचित 'प्रायश्चित्त' का पात्र बन सकता है।
प्रश्न 10: सम्यक्त्व दीक्षा के दौरान श्रावक किन तीन तत्वों को अपना आराध्य, गुरु और धर्म स्वीकार करता है?
उत्तर: 1. आराध्य देव: भगवान महावीर, 2. गुरु: आचार्य श्री महाश्रमणजी, 3. धर्म: जैन श्वेतांबर तेरापंथ।
प्रश्न 11: संघीय संस्थाओं का अधिकतम कार्यकाल कितना निर्धारित किया गया है?
उत्तर: दो वर्ष से अधिक नहीं।
प्रश्न १२: क्या संघीय संस्थाओं (जैसे- ते.यु.प. या ते.म.मं.) में 'आनुवंशिक ट्रस्टी' (Hereditary Trustee) या सदस्य बनाए जा सकते हैं?
उत्तर: नहीं, संघीय संस्थाओं में आनुवंशिक ट्रस्टी और सदस्य नहीं बनाए जाने चाहिए।
प्रश्न 13: कल्याण परिषद् के सदस्यों (कल्याण पार्षद) के लिए कौन सा विशेष संकल्प लेना अनिवार्य है?
उत्तर: "मैं राग-द्वेष से प्रेरित होकर कोई भी बात कल्याण परिषद् गोष्ठी में नहीं कहूँगा"।
प्रश्न 14: संघ की 'एक व्यक्ति, एक पद' व्यवस्था के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति एक से अधिक पदों पर चुन लिया जाता है, तो उसे कितने समय के भीतर अतिरिक्त पद छोड़ना होगा?
उत्तर: तीन महीनों के भीतर-भीतर उसे किसी भी एक पद से मुक्त होना होगा।
प्रश्न 15: किसी भी ट्रस्ट, विद्यालय, अस्पताल या भवन के नाम के साथ 'तेरापंथ' या 'तेरापंथ-आचार्यों' का नाम जोड़ने के लिए किसकी लिखित स्वीकृति अनिवार्य है?
उत्तर: जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा की लिखित स्वीकृति अनिवार्य है।
प्रश्न 16: 'श्रावक संदेशिका' के अनुसार "परम" (जैसे- परम आराध्य, परम श्रद्धेय) शब्द का प्रयोग विशेष रूप से किसके लिए किया जाना चाहिए?
उत्तर: इस शब्द का प्रयोग केवल 'आचार्य' के लिए ही किया जाना चाहिए, अन्य किसी चारित्रात्मा के लिए नहीं।
प्रश्न 17: कल्याण परिषद् की गोष्ठी सामान्यतः अंग्रेजी महीने की किस तारीख को आयोजित की जा सकती है?
उत्तर: प्रत्येक महीने की 29 तारीख को।
प्रश्न 18: तेरापंथ भवन में आचार्यों और आगमों के सुवाक्यों के अलावा क्या किसी अन्य चारित्रात्मा (साधु-साध्वी) के सुवाक्य अंकित किए जा सकते हैं?
उत्तर: नहीं, भवन में केवल आगमों और आचार्यों के सुवाक्यों को ही अंकित किया जाना चाहिए, अन्य चारित्रात्माओं के नहीं।
प्रश्न 19: स्थानीय सभा का साधु-साध्वियों के प्रति 'चिकित्सा' संबंधी क्या दायित्व बताया गया है?
उत्तर: साधु-साध्वियों और समणियों की चिकित्सा व्यवस्था का दायित्व स्थानीय सभा का होता है।
प्रश्न 20: यदि किसी क्षेत्र में सभा का गठन करना हो, तो उसके लिए किसकी लिखित स्वीकृति आवश्यक है?
उत्तर: महासभा (Mahasabha) की लिखित स्वीकृति के बिना सभा का गठन नहीं किया जाना चाहिए।

Round 3: "मर्यादा परिस्थितियों में" व्यावहारिक (परिस्थिति), 5-10 अंक (विवेक पर), 1 मिनट

- स्वरूप: यह एक विचार-प्रधान राउंड है।
- नियम: टीम को एक परिस्थिति (Case Study) दी जाएगी। उन्हें न केवल "हाँ या ना" में उत्तर देना है, बल्कि उसका कारण भी बताना है ।
- अंक: उत्तर की सटीकता और तर्क के आधार पर 5 से 10 के बीच अंक दिए जाएंगे। निर्णायक मंडल (Jury) का निर्णय अंतिम होगा।

प्रश्न 1: आजकल व्हाट्सएप और फेसबुक पर साधु-साध्वियों के दीक्षा दिवस या जन्मदिन पर बधाई संदेश भेजने का चलन बढ़ गया है। 'श्रावक संदेशिका' के अनुसार इस स्थिति में क्या मर्यादा है?
उत्तर: साधु, साध्वी और समणी के जन्मदिन या दीक्षा दिवस के अवसर पर व्हाट्सएप या अन्य सोशल मीडिया माध्यमों से बधाई संदेश नहीं दिए जाने चाहिए।
प्रश्न 2: यदि किसी परिवार को मजबूरीवश या किसी आयोजन में होटल में भोजन करना पड़े, तो 'श्रावक संदेशिका' उन्हें क्या सावधानी बरतने का निर्देश देती है?
उत्तर: श्रावक को यथासंभव उस होटल में भोजन नहीं करना चाहिए जहाँ शाकाहारी और मांसाहारी दोनों भोजन बनते हों। यदि करना ही

पड़े, तो यह सुनिश्चित करना अनिवार्य है कि शाकाहारी भोजन में मांसाहार का मिश्रण न हो।
प्रश्न 3: आजकल शादियों में शराब परोसना एक 'स्टेटस सिंबल' बन गया है। तेरापंथी परिवारों के आयोजनों के लिए इसमें क्या स्पष्ट मर्यादा है?
उत्तर: तेरापंथी परिवारों द्वारा आयोजित नामकरण, शादी आदि समारोहों में शराब की व्यवस्था बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। यदि किसी ऐसे कार्यक्रम में शराब की व्यवस्था हो, तो श्रावक को वहां नहीं जाना चाहिए, और यदि चले गए हों तो तुरंत लौट आना चाहिए।
प्रश्न 4: सामायिक के दौरान यदि मोबाइल में अलार्म बज जाए या समय देखना हो, तो क्या मोबाइल का उपयोग किया जा सकता है?
उत्तर: सामायिक के दौरान मोबाइल फोन का स्पर्श भी नहीं करना चाहिए, उसका उपयोग समय देखने के लिए अगर किया जाए तो आपत्ति नहीं। यदि घंटी बजने पर उसे बंद करना पड़े, तो उसका प्रायश्चित्त लेना चाहिए।
प्रश्न 5: बाजार में मिलने वाले पैकेटबंद पदार्थों की शुद्धता की पहचान श्रावक को कैसे करनी चाहिए?
उत्तर: श्रावक को केवल उन्हीं पदार्थों का उपयोग करना चाहिए जिन पर 'हरे रंग' का वृत्त (Green Mark) हो। लाल चिह्न वाले या बिना किसी चिह्न वाले संदेहास्पद पैकेटों के भक्षण से बचना चाहिए।
प्रश्न 6: क्या रक्तदान शिविर, चश्मा वितरण या कंबल वितरण जैसी नितांत लौकिक प्रवृत्तियों के स्थान पर साधु-साध्वियों का सान्निध्य या उनके द्वारा मंगलपाठ सुनाया जाना अपेक्षित है?
उत्तर: नहीं, ऐसी नितांत लौकिक प्रवृत्तियों में साधु-साध्वियों का सान्निध्य या वहां जाकर उनके द्वारा मंगलपाठ सुनाया जाना अपेक्षित नहीं है।
प्रश्न ७: यदि किसी व्यक्ति का अंतर्मन (Self) यह गवाही दे कि उससे साधु-मर्यादाएँ ठीक से नहीं पल रही हैं, फिर भी वह केवल लोक-लाज या सुविधाओं के लिए संघ में बना रहता है, तो वह किस मर्यादा के विरुद्ध है?
उत्तर: उस मर्यादा विरुद्ध, जो कहती हैं कि गण में केवल शुद्ध साधुपन की श्रद्धा रखने वाले को ही रहना चाहिए, छल-कपट या वंचनापूर्वक संघ में रहने का त्याग है ।
प्रश्न 8: यदि कोई श्रावक उपवास या तपस्या में है और उसे अचानक बीमार होने पर इंजेक्शन लेना पड़े, तो क्या उसकी तपस्या भंग मानी जाएगी?
उत्तर: इंजेक्शन लेने से तपस्या मानी जाएगी (भंग नहीं होगी), लेकिन इंजेक्शन लेने का प्रायश्चित्त लेना आवश्यक है।
प्रश्न 9: सामायिक में बैठे हुए क्या रिमोट से टी.वी. या एयर-कंडीशनर (AC) को ऑन-ऑफ किया जा सकता है?
उत्तर: सामायिक के दौरान टी.वी. या रिमोट जैसे उपकरणों का उपयोग नहीं करना चाहिए।
प्रश्न 10: क्या किसी संस्था के पदाधिकारी के रूप में बैनर, पोस्टर या व्हाट्सएप प्रचार सामग्री में अपना फोटो लगाना मर्यादित है?
उत्तर: नहीं, संघीय संस्थाओं या व्यवस्था समितियों द्वारा जारी किसी भी प्रचार सामग्री (बैनर, पोस्टर, कार्ड, व्हाट्सएप आदि) में अध्यक्ष, मंत्री आदि के नाम और फोटो नहीं आने चाहिए।
प्रश्न 11: आजकल हर कोई 'तेरापंथ' या 'आचार्यों' के नाम पर व्हाट्सएप ग्रुप या फेसबुक पेज बना लेता है। 'श्रावक संदेशिका' के अनुसार, केंद्रीय संस्थाओं के सिवाय क्या कोई व्यक्ति या स्थानीय संस्था ऐसे ग्रुप चला सकती है?
उत्तर: नहीं, केंद्रीय संस्थाओं के सिवाय कोई भी संस्था या व्यक्ति तेरापंथ और तेरापंथ-आचार्यों के नाम से सोशल मीडिया (व्हाट्सएप, फेसबुक आदि) पर कोई ग्रुप नहीं चला सकता।
प्रश्न 12: यदि कोई तेरापंथी विद्यार्थी डॉक्टर बनने के लिए पढ़ाई कर रहा है और उसे मेंढक आदि जीवों की चीर-फाड़ (dissection) करनी पड़े, तो क्या इससे उसका जैनत्व या तेरापंथित्व खंडित होता है?
उत्तर: नहीं, चिकित्सकीय शिक्षा के संदर्भ में ऐसी हिंसा करने से जैनत्व और तेरापंथित्व में क्षति नहीं होती, हालांकि यथासंभव इससे बचने का प्रयास करना चाहिए।
प्रश्न 13: अक्सर घरों में अपने ज्ञाति (न्यातीले) साधु-साध्वियों के फोटो लगाए जाते हैं। मर्यादा के अनुसार, कमरे में लगे साधु-साध्वियों के फोटो का आकार आचार्यों के फोटो की तुलना में कैसा होना चाहिए?
उत्तर: किसी भी साधु-साध्वी के फोटो का आकार उस कक्ष में लगे आचार्यों के फोटो के आकार से बड़ा नहीं होना चाहिए।
प्रश्न 14: क्या कोई श्रावक अपने निजी शोरूम, दुकान या फैक्ट्री का नाम 'भिक्षु' या 'तेरापंथ' के नाम पर रख सकता है?
उत्तर: नहीं, किसी भी व्यावसायिक प्रतिष्ठान के नामकरण में तेरापंथ या तेरापंथ-आचार्यों का नाम नहीं जोड़ा जा सकता।
प्रश्न 15: आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में अक्सर यात्राएं करनी पड़ती हैं। क्या वायुयान (Plane) या रेलगाड़ी में संस्थित व्यक्ति प्रतिक्रमण कर सकता है?
उत्तर: हाँ, वायुयान, रेलगाड़ी आदि वाहनों में संस्थित व्यक्ति भी प्रतिक्रमण कर सकता है।
प्रश्न 16: आधुनिक दौर में किसी भी कार्यक्रम की शुरुआत 'दीप प्रज्वलन' (lighting the lamp) से करना आम बात है। तेरापंथी संस्थाओं द्वारा संचालित विद्या संस्थानों के कार्यक्रमों के लिए क्या निर्देश है?
उत्तर: संघीय संस्थाओं द्वारा संचालित विद्या संस्थानों के कार्यक्रमों में दीप प्रज्वलन नहीं होना चाहिए।
प्रश्न 17: यदि कोई श्रावक सामायिक या संवर में है, तो क्या वह आध्यात्मिक स्वाध्याय के लिए आईपैड (iPad) या टैबलेट का उपयोग कर सकता है?
उत्तर: बारहव्रत धारी श्रावकआगार-सहित संवर में आध्यात्मिक कार्यों के लिए आईपैड आदि का उपयोग कर सकते हैं, किंतु सामायिक के दौरान वैसा (उपयोग) करने का निषेध है।

प्रश्न 18: अक्सर लोग तीर्थ स्थानों के दर्शन के लिए बड़े-बड़े संघ या यात्राएं आयोजित करते हैं। तेरापंथ की मर्यादा के अनुसार, क्या श्रावक को ऐसे संघ या यात्रा का प्रायोजक (Sponsor) बनना चाहिए?

उत्तर: तीर्थ स्थानों के संदर्भ में यात्रा या संघ निकालना और उसका प्रायोजक बनना उपयुक्त नहीं है।

प्रश्न 19: नाटकों या सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आचार्यों का पात्र निभाना तो सम्मत है, पर क्या उनकी आवाज़ के लहजे में बोलने (Mimicry) का प्रयास करना मर्यादित है?

उत्तर: नहीं, नाटक के मंचन में कोई भी व्यक्ति आचार्यों की आवाज़ के लहजे में बोलने (Mimicry) का प्रयास न करे।

प्रश्न 20: यदि किसी का कालधर्म (मृत्यु) हो जाए या वे संथारा ग्रहण करें, तो साधु-साध्वियों के ऑडियो/वीडियो संदेश व्हाट्सएप पर प्रसारित किए जाने चाहिए?

उत्तर: नहीं, मृत्यु, तपस्या आदि के संदर्भ में साधु-साध्वियों के ऑडियो, वीडियो संदेश व्हाट्सएप आदि के माध्यम से नहीं भेजे जाने चाहिए।

प्रश्न 21: यदि कोई परिवार किसी संस्था को अलमारी, बाजोट या अन्य सामान भेंट करता है, तो क्या उस सामान पर किसी साधु-साध्वी या समणी का नाम लिखवाया जा सकता है?

उत्तर: नहीं, भेंट में दिए जाने वाले सामान पर साधु-साध्वियों या समणियों के नाम किसी भी रूप में नहीं लगाए जाने चाहिए।

प्रश्न 22: गुरुकुलवास (आचार्यश्री के प्रवास) के दौरान जो वाहन सेवा में चलते हैं, क्या उन पर दानदाता (गृहस्थ) का फोटो लगाया जा सकता है?

उत्तर: नहीं, गुरुकुलवास में संचालित वाहनों पर अनुदानदाता के रूप में किसी गृहस्थ का फोटो नहीं लगाया जाना चाहिए।

प्रश्न 23: आजकल हर कोई मोबाइल से वीडियो बनाता है। क्या साधु-साध्वियों के लोच, आहार, गोचरी या व्यायाम का वीडियो या फोटो लिया जा सकता है?

उत्तर: नहीं, साधु, साध्वी और समणी की इन अंतरंग प्रवृत्तियों (लोच, आहार, गोचरी, व्यायाम) का वीडियो या फोटो लेना वर्जित है।

प्रश्न 24: आधुनिक कार्यक्रमों में वाद्ययंत्रों (Musical Instruments) का प्रयोग होता है। मर्यादा के अनुसार, आचार्यप्रवर के प्रवास स्थल से कितनी दूरी के भीतर वाद्ययंत्रों वाली संगीत संध्या का आयोजन नहीं होना चाहिए?

उत्तर: सामान्यतया आचार्यप्रवर के प्रवास स्थल से 300 मीटर की परिधि में वाद्ययंत्रों वाली संगीत संध्या का आयोजन नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 25: यदि कोई व्यक्ति अपने जन्मदिन या विवाह की वर्षगांठ पर विकलांगों को उपकरण (जैसे- ट्राईसाइकिल) बाँटना चाहता है, तो क्या वह यह कार्यक्रम मुख्य प्रवचन पांडाल में आचार्यश्री के सामने कर सकता है?

उत्तर: नहीं, मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में ऐसा कोई उपक्रम नहीं रखा जा सकता। इसकी सूचना दी जा सकती है, पर कार्यक्रम बाद में अलग से करना चाहिए।

प्रश्न 26: यदि कोई श्रावक अठाई या अन्य बड़ी तपस्या में है और उसे स्वास्थ्य कारणों से ऑक्सीजन (Oxygen) या इनहेलर (दवा रहित) लेना पड़े, तो क्या उसकी तपस्या भंग हो जाएगी?

उत्तर: नहीं, तपस्या के दौरान ऑक्सीजन या इनहेलर (कैप्सूल-दवा रहित) लेने से तपस्या का भंग नहीं होता।

प्रश्न 27: तेरापंथ भवन या समाधि स्थलों के कमरों में रुकते समय पुरुष और महिला के लिए क्या 'शिष्ट व्यवस्था' दी गई है?

उत्तर: मर्यादा के अनुसार, अकेले पुरुष को अपने परिवार की महिला सदस्य के सिवाय, किसी अन्य अकेली महिला के साथ कमरे में नहीं रहना चाहिए।

प्रश्न 28: अक्सर चर्चा होती है कि प्रतिक्रमण के बाद भोजन करना चाहिए या नहीं। 'श्रावक संदेशिका' इस बारे में क्या स्पष्ट करती है?

उत्तर: प्रतिक्रमण के बाद भोजन करने का निषेध नहीं है। यदि कोई अपनी इच्छा से त्याग करे तो अच्छी बात है, अन्यथा यह वर्जित नहीं है।

प्रश्न 29: नाटकों में अभिनय के दौरान क्या पुरुष पात्र 'साफा' (पगड़ी) पहनकर चारित्रात्माओं के सम्मुख प्रस्तुति दे सकते हैं?

उत्तर: नहीं, वेश-परिवर्तन वाले नाटकों में साफा पहनना वर्जित है (टाई आदि का उपयोग किया जा सकता है)।

प्रश्न 30: संघ में किसी सूक्ष्म श्रद्धा या आचार के विषय को लेकर दो विचार बन रहे हैं। कुछ लोग अपनी बात को सही साबित करने के लिए गुटबाजी (Grouping) करना चाहते हैं। मर्यादा पत्र के अनुसार सही आचरण क्या होगा?

उत्तर: दलबंदी बिल्कुल नहीं करनी चाहिए। आचार्य या बहुश्रुत (विद्वान) साधु जो कहें, उसे मान लेना चाहिए अथवा उसे 'केवलीगम्य' (केवल ज्ञानियों के जानने योग्य) मानकर विवाद छोड़ देना चाहिए ।

प्रश्न 31: चर्चा के दौरान आवेश में आकर यदि कोई किसी सदस्य के पुराने गृहस्थ जीवन, जाति या कुल को लेकर नीचा दिखाने वाले शब्द बोलता है, तो वह किस मौलिक मर्यादा का उल्लंघन कर रहा है?

उत्तर: उस मर्यादा का, जो कहती है कि किसी भी साधु-साध्वी के प्रति जाति आदि को लेकर ओछी जुबान (अपमानजनक भाषा) नहीं बोलनी चाहिए ।

Round 4: "मर्यादा का मनन" रचनात्मक प्रस्तुति, अधिकतम 20 अंक, 2 मिनट

- **प्रत्येक टीम को मर्यादा से जुड़ा अपना कोई अनुभव साझा करना होगा या एक स्लोगन/कविता प्रस्तुत करनी होगी।**
- **यह राउंड टीम की मौलिकता और मर्यादा के प्रति उनके लगाव को दर्शाएगा।**

प्रेरक प्रसंग

♦ ज्ञान का अभाव ♦

एक बार की बात है। एक ऐसी महिला थी जिसका स्वभाव अत्यंत क्रोधी था। उसके भीतर लोभ की प्रवृत्ति प्रबल थी और मन में शांति का अभाव था। वह प्रायः संतों के दर्शन करने जाती, उनके मुख से ज्ञान की बातें सुनती, परंतु उनमें से कुछ भी आत्मसात नहीं कर पाती। एक दिन संत ने उसे देखकर कहा, "बाई, लगता है तुझे तो रत्नप्रभा मिलेगी।" यह सुनकर वह महिला अत्यंत प्रसन्न हो गई। उसने मन ही मन सोचा कि आज उसे बड़ा शुभ आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। उसने विनम्रता से संत से पूछा, "महाराज, रत्नों की प्रभा मुझे जैसे तुच्छ प्राणी को कैसे मिल सकती है? वह तो आप जैसे त्यागी संत महात्माओं को ही शोभा देती है।" संत मुस्कुराए और बिना कुछ कहे वहाँ से चले गए। वास्तव में 'रत्नप्रभा' प्रथम नरक पृथ्वी का नाम है।

मर्म: "अज्ञानी कैसे समझे ज्ञान का सार, रत्नप्रभा- प्रथम नरक भूमि, को समझा रत्नों का हार।"

♦ तेरापंथ की विलक्षण श्राविका ♦

गंगाशहर निवासी एवं अथगाँव (असम) प्रवासी मगनलालजी गुलगुलिया की पुत्री का नाम सुगणी बाई था। मगनलालजी का असम में पाट का व्यापार था। उनकी दुकान के ठीक सामने गंगाशहर के ही कालूरामजी चौपड़ा की दुकान थी। कालूरामजी के छोटे भाई कस्तूरचंदजी वहीं रहकर उनकी दुकान के कार्यों में हाथ बँटाते थे। कस्तूरचंदजी का शरीर स्वस्थ एवं सुंदर था। अपनी आयु के युवकों में वे सर्वाधिक शक्तिशाली माने जाते थे। योग्य जानकर मगनलालजी ने अपनी पुत्री सुगणी बाई का विवाह कस्तूरचंदजी के साथ करवा दिया। कस्तूरचंदजी शरीर से जितने सबल थे, मन से भी उतने ही सुदृढ़ थे। धर्म के मर्म को उन्होंने भली-भाँति समझा था और अपने जीवन में उतारा था।

एक बार कुएँ में गिरे बैल को पुरजी जाट की सहायता से बाहर निकालते समय अत्यधिक दबाव पड़ने के कारण उनके सीने में दर्द रहने लगा। सुगणी बाई के दो पुत्र और एक पुत्री हुईं, पर नियति में संतान-सुख का योग न होने के कारण जन्म के कुछ ही महीनों पश्चात ही तीनों अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गए। नियति का यह क्रूर प्रहार यहीं तक नहीं रुका। सीने का दर्द बढ़ने के कारण कस्तूरचंदजी का भी कम आयु में ही देहांत हो गया। उस समय सुगणी बाई चौपड़ा की आयु मात्र पच्चीस वर्ष थी।

व्यापारिक व्यवस्था और कुल की परंपरा बनी रहे, इस दृष्टि से उन्होंने अपने जेठ कालूरामजी के बीस वर्षीय पुत्र गुलाबचंदजी को गोद ले लिया। सुगणी बाई प्रारंभ से ही धर्मध्यान में गहरी रुचि रखने वाली महिला थीं। उन्होंने अपना शेष जीवन साधु-साध्वियों की उपासना और आत्मसाधना में व्यतीत किया। सुगणी बाई पढ़ी-लिखी नहीं थीं, फिर भी पूछ-पूछकर, एक-एक पद समझकर उन्होंने सहस्र पद्य प्रमाण, गीतिकाएँ, स्तवन, थोकड़े आदि कंठस्थ कर लिए थे। वे प्रायः यथाक्रम स्वाध्याय भी करती रहती थीं। स्वाध्याय के साथ-साथ तपस्या का क्रम भी अनवरत चलता रहा। कंठहार, धर्मचक्र, तीर्थकरों की लड़ी, कर्मचूर, मासखमण, श्रावण महीने में एकांतर आदि अनेक तपस्याओं की सूची प्राप्त होती है।

सुगणी बाई चोपड़ा ने मृत्यु को भी महोत्सव बना दिया और पंद्रह मिनट के संन्यारे के साथ इस लोक से परलोक की ओर गमन किया। पूरा संघ-समाज सुगणी बाई चोपड़ा के श्रद्धा और समर्पण को नमन करता है।

♦ संस्था संविधान ♦

साधारण सदन के कार्य

1. वार्षिक कार्य विवरण का प्रतिवेदन (रिपोर्ट) स्वीकार करना।
2. आवश्यकतानुसार कार्यसमिति के निर्णयों की समीक्षा करना।
3. सदन में प्रस्तुत प्रस्तावों पर विचार करना व निर्णय करना।
4. कार्यसमिति की अनुशंसा पर किसी विशेष उद्देश्य हेतु कोष का निर्माण करना अथवा एक कोष की राशि को दूसरे कोष में हस्तांतरित करना।
5. अध्यक्ष पर अविश्वास प्रस्ताव आने पर निर्णय करना।

श्रावक संदेशिका

संस्था कार्यकाल

1. संघीय संस्थाओं का कार्यकाल दो वर्ष से अधिक न हो।
2. संघीय संस्थाओं में एक व्यक्ति निरंतर दो कार्यकाल से अधिक अध्यक्ष पद पर न रहे।

संस्थागत सामान्य दिशानिर्देश

1. अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अनुमति, स्वीकृति के बिना आंचलिक कार्यशाला का आयोजन न करें।
2. शाखा मंडल का गठन अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की स्वीकृति के बिना नहीं किया जाए।
3. संस्था के संविधान, श्रावक संदेशिका, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशों की संपूर्ण जानकारी रखें, अनुपालना के प्रति जागरूक रहें। उनका किसी प्रकार का अतिक्रमण न हो, इसका विशेष ध्यान रखें।

योगक्षेम वर्ष 2026-2027

♦ प्रज्ञा पाथेय-साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यशाला ♦

योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत संचालित साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारंभ 15 फरवरी से हो चुका है। इसी श्रृंखला में मई माह में चयनित बहनों के लिए विशेष प्रशिक्षण का आयोजन किया जाएगा। इस प्रशिक्षण में योग, प्रेक्षाध्यान, तत्त्वज्ञान आदि विषयों का अभ्यास कराया जाएगा। साथ ही बहनों को भावना चौका में सेवा देने का पावन सौभाग्य भी प्राप्त होगा। इस विशेष प्रशिक्षण की प्रमुख विशेषता रहेगी -परम पूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर, परम श्रद्धेय साध्वी प्रमुखा श्री जी, मुख्य मुनि प्रवर, साध्वी वर्याजी एवं अन्य प्रबुद्ध चारित्रात्माओं का प्रेरणादायी मार्गदर्शन।

मई माह के चयनित क्षेत्रों की सूची:

3 MAY TO 9 MAY 2026

ASSAM	GUWAHATI	SUSHILA MALOO	9435049166
ASSAM	HAIBARGAON (NAGAON)	SANGITA CHORARIA	7638881060
ASSAM	JORHAT	SANTOSH HIRAWAT	9401149864
ASSAM	KARIMGANJ	HEMLATA LALANI	7896806494
ASSAM	KHARUPETIA	MANJU BAID	7896479130
ASSAM	KRISHNAI	SAROJ NAHATA	6001646976
ASSAM	SILCHAR	REKHA CHORADIA	7663808383
ASSAM	TEZPUR	SNEH LATA DUGAR	9085063731
NAGALAND	DIMAPUR	SUMAN BOTHRA	7005224613

10 MAY TO 16 MAY 2026

BIHAR	ARARIA COURT	SARITA BEGWANI	9097882761
BIHAR	ARARIA RS	NORTI DEVI DUGAR	8952067747
BIHAR	BHAGALPUR	SANTOSH BAID	7004344832
BIHAR	BHATTA	MADHUBANI INDRA JAIN (BACHAWAT)	8083853345
BIHAR	FORBESGANJ	SAMTA DUGAR	9470203299
BIHAR	GULABBAGH	BABITA MALU	9661957222
BIHAR	KATIHAR	SANGEETA PATAWARI	9471673878
BIHAR	KHUSHKIBAGH	SARITA RANKA	9955462026
BIHAR	KISHANGANJ	SONIA SRIMAL	8521995455
BIHAR	NIRMALI	MANJU DEVI NAHAR	7070114917
BIHAR	PATNA CITY	BABITA BARMECHA	9430283960
BIHAR	PATNA JUNCTION	SUMAN BOTHRA	9031848440

17 MAY TO 23 MAY 2026

CHATTISGARH	AMBIKAPUR	POOJA SETHIA	6264758037
CHATTISGARH	BEKUNTHPUR	SAMTA BAID	9340499050
CHATTISGARH	BHILAI	SUCHITA BOHRA	9098345678
CHATTISGARH	BILASPUR	KUSUM LUNIA	7980962421
CHATTISGARH	DURG	ANITA MALU	9329185930
CHATTISGARH	JAGDALPUR	RAVIKALA LUNKAD	9425520123
CHATTISGARH	MANENDRAGARH	MADHU CHAURADIA	9907372272
CHATTISGARH	RAIPUR	PRAMILA BARLOTA	9713196968
CHATTISGARH	RAJNANDGAON	NIRMALA SURANA	7805998828

24 MAY to 30 MAY 2026

HARYANA	FATEHABAD	RASHMI JAIN	9416962558
HARYANA	HANSI	SIDHI JAIN	9034666636
HARYANA	HISAR	DEEPA JAIN (DEEPMALA)	9255943184
HARYANA	JAKHALMANDI	MONIKA JAIN	9888875698
HARYANA	JIND	RENU JAIN	8930599833
HARYANA	MANDI ADAMPUR	MINAKSHI JAIN	9050224115
HARYANA	NARWANA	USHA MITTAL	9416138904
HARYANA	PANCHKULA	MEENU DUGAR	9023758585
HARYANA	ROHTAK	VANDANA JAIN	7015232700
HARYANA	TOHANA	AARTI JAIN	9467427480
HARYANA	UCHANA	MANDI DARSHNA JAIN	8708008196
HARYANA	YAMUNANAGAR	MANISHA JAIN	8930584985

आवश्यक निर्देश:

1. चयनित बहनें समय रहते अपनी टिकट बनवाकर संयोजिकाओं को सूचित करें।
2. आवास एवं भोजन की व्यवस्था अखिल भारतीय तेरापन महिला मंडल द्वारा की जाएगी।
3. प्रज्ञा पाथेय भावना चौका सेवा हेतु केवल 60 वर्ष तक की स्वस्थ बहनें ही अनुमत हैं।
4. सेवा में भाग लेने वाली प्रत्येक बहन को सातों दिन निर्धारित गणवेश पहनना अनिवार्य है।
5. अपना आधार कार्ड एवं एक पासपोर्ट साइज फोटो साथ लाना अनिवार्य है।

मुख्य संयोजिका

श्रीमती प्रीति घोषल 88004 46397

संयोजिका

श्रीमती माला कातरेला 98417 25560

श्रीमती सज्जन पारख 92334 23522

श्रीमती राखी बैद 98242 99955

श्रीमती चांद छाजेड़ 93275 49313

श्रीमती साधना सामसुखा 90233 04863

ज्ञान चेतना
प्रश्नोत्तरी
मार्च 2026
QUIZ-5

महिला मंडल QUIZ

सही उत्तर लिखें:

1) प्रार्थी शिष्य को आचार्य क्या देते हैं?

2) किस को बढ़ावा मिले तो गण में दरार पड़ सकती है?

3) बड़े जो उत्तर दे वह हृदय में न बैठे तो उसे साधु क्या करें?

4) आचार्य भिक्षु के मौलिक तत्व के महान भाष्यकार कौन थे?

5) 'तेरापंथ' साधु समूह के लिए प्रायः किस शब्द का प्रयोग होता है?

6) गण से अलग हुए साधु को वंदना करना किसकी आज्ञा के प्रतिकूल है?

7) साधु साध्वियों के विहार क्षेत्र का निर्णय किस महोत्सव के दिन होता है?

8) दिल को छिपाकर बोलने की आदत विवेक नहीं बल्कि किसकी कमजोरी है?

9) गण से पृथक साधु गण अनुयायी के गाँव में एक रात से अधिक रहे तो क्या न खाए?

10) किसी को शंकाशील बनाकर अपने गुट में लेना, गण में भेद डालना कैसे मन की प्रतिक्रिया है?

रिक्त स्थान की पूर्ति करें:

1) ___ जीवन साधना का जीवन है।

2) सर्व सम्मति निर्णय की स्थिति ___ ही है।

3) ___ धर्मों को सुनने के लिए प्रयत्नशील रहो।

4) मन मुटाव का प्रमुख कारण है ___ की क्षति।

5) गाँवों की अपेक्षा शहरों में ___ अधिक होती हैं।

6) 'तू मैं' के इस झगड़े का जो ___ आचार्य वही है।

7) व्यवहार में दोषी वह है जो दोषों का ___ करता है।

8) ___ की कमी जोश पर काबू पाने में अड़चन पैदा करती है।

9) श्रद्धालु के लिए श्रद्धा सुधा होती है और श्रद्धेय के लिए ___।

10) आचार्य भिक्षु का यह विधान संघ की ___ को अक्षुण्ण रखने का अमोघ उपाय है।

फरवरी माह के सही जवाब...सही उत्तर लिखें

सही उत्तर लिखें		रिक्त स्थान की पूर्ति करें	
1) संप्रदाय	6) गण	1) स्वतंत्रता	6) हिंसा
2) वैराग्य	7) अहिंसा	2) ज्ञान राशि	7) बुद्धी
3) पाखंडी	8) परिग्रह	3)आत्मसाधना	8) दूसरी
4) उपाध्याय	9) हेमराज जी स्वामी	4) तर्क	9) एकता
5) अनुशासन	10) भगवान	5) गणी	10) श्रद्धा
	11) शासन		11) सबकी

सन्दर्भ पुस्तक : भिक्षु विचार दर्शन(पेज संख्या..166 से 186)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

संयोजिका
श्रीमती अर्चना भंडारी
98100 11500

सह संयोजिका
श्रीमती मीना बडाला
93209 53145

Google Form Link:
https://forms.gle/Eez7B6c4Jtk6Qb6H8

कन्या मंडल QUIZ

Crosswords:

संदर्भ: तेरापंथ प्रबोध, पद्य संख्या 41-50

बांए से दांए (Left to Right)

1) आचार्य भिक्षु और उनके साथी सन्तों ने नदी की तर में क्या लेनी शुरू की। (4)
3) अभिनिष्क्रमण के समय भीखण जी आदि कितने साधु थे(3)
5) पीछे (2)
6) तेरापंथ में सर्वप्रथम दीक्षित साध्वियों में से एक (3)
7) भीखण जी का नाम सुनते ही गुस्से में साध्वीजी से क्या छिनकर घाट वापस ले ली (2)
8) साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध धर्मसंध (3)
11) भीखण जी के गुरु कौन थे जिनसे वे अलग हुए थे (5)
12) विरोधी लोगों के बहकावे में किन्होंने भीखण जी को नाथद्वारा छोड़ने का आदेश दे दिया (3)
14) कितने वर्षों तक अभिनिष्क्रमण के समय के साधुओं की संस्था में वृद्धि नहीं हुई (3)
17) सिरियारी नगर के बाहर कौनसी पर्वतमाला है (4)
19) आचार्य तुलसी ने नदी का क्या नामकरण कर दिया (4)

ऊपर से नीचे (Top to Bottom)

1) निराशा के समय आ. भिक्षु ने किसके कारज सारने की बात कही है (3)
2) तपस्या का काम हमारा है आप जनता को प्रतिबोध दें यह बात कहने वाले संत (5)
3) कितने में से सात गये छव रहया परमार्थपखी (2)
4) तेरापंथ के इतिहास में अमर होने वाले संतों में से एक (5)
8) तेरापंथ धर्मसंध में सर्वप्रथम कितनी बहनें दीक्षा के लिए तैयार हुई (2)
9) संकल्प की पुष्टि के लिए भीखणजीने किसकी ऊंचाई को साधना शुरु कर दिया (2)
10) वि. सं. 1843 में आचार्य भिक्षु का चातुर्मास कहां था (4)
13) आ. भिक्षु ने कौन से बाजार में घी बिकता हुआ देखने की बात कही है (2)
15) भीखण जी ने किनके अन्तरमन की मनुहार मानी (2)
16) वि. सं. 2047 में सिरियारी में कौन से आचार्य श्री पधारे (3)
17) अक्षय, अमर (2)
18) धर्मक्रान्ति में साथ हुए कितने साधुओं ने वह रास्ता छोड़ दिया(2)

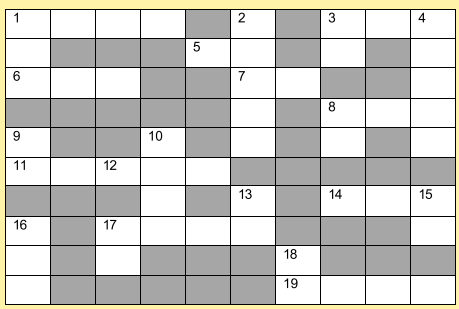

फरवरी 2026 माह की कन्यामंडल वर्ग पहेली के सही जवाब

दाएं से बाएं		ऊपर से नीचे	
1) सेवग	14) मान	2) वन्दन	10) सुमरत
3) दीवान	16) महाव्रत	3) दीक्षा	11) यक्ष
6) भिक्षा	17) स्थानक	4) नमस्कार महामंत्र	12) सामायिक
7) मरुधर	20) भारीमाल जी	5) पुर	15) किशनोजी
9) तीन	21) तेरापन्थ	6) भिक्खण	18) तेरा
13) जयमल		8) धर्म	19) पन्थ

संयोजिका श्रीमती मंजू भूतोडिया 93121 73434

Google Form Link: https://forms.gle/ycRm595tjXuBYp5e9

प्रश्नोत्तरी भरकर भेजने की अंतिम तिथि 15 मार्च 2026 है।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को प्रदत्त अनुदान

समस्त अनुदानदाताओं का हार्दिक आभार

स्वर्गीय श्रीमती सुंदरदेवी शंकरलाल जी एवं श्रीमती लता जी कमलेश जी बोल्या
सूरत
₹ 1,00,000

श्रीमती रचना जी प्रीतम जी हिरण
कांदिवली, मुंबई
₹ 1,00,000

श्रीमती हेमा जी संजय जी चोरड़िया
दिल्ली
₹ 1,00,000

तेरापंथ महिला मंडल
अरक्कोनम
₹ 51,000

तेरापंथ महिला मंडल
साउथ दिल्ली
₹ 51,000

तेरापंथ महिला मंडल
उत्तर दिल्ली
₹ 51,000

तेरापंथ महिला मंडल
पूर्वांचल, कोलकाता
₹ 51,000

तेरापंथ महिला मंडल
शिवकाशी
₹ 31,000

तेरापंथ महिला मंडल
बहरामपुर
₹ 25,000

श्रीमती सुनीता जैन, भिवानी
(श्रीमती गुणमाला जैन की पुण्य स्मृति में)
₹ 21,000

गुप्त दान
₹ 11,000

श्रीमती प्रेमाबाई
सीमा जी आंचलिया
₹ 11,000

श्रीमान विनोद जी, अनिल जी, सुनील जी मुनोत, कोलकाता
₹ 11,000

श्रीमती कनक जी विनोद जी चौपड़ा,
कोलकाता
₹ 11,000

श्रीमती सुशीला जी कमल जी सेठिया
कोलकाता
₹ 11,000

श्रीमान सम्राट जी आंचलिया
दिल्ली
₹ 11,000

श्रीमान अशोक कुमार जी दुगड़
दिल्ली
₹ 10,200

श्रीमान अनिल जी बांठिया
कोलकाता
₹ 5,000

पंजीकृत कार्यालयः रोहिणी, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं (राज.) 341306

महामंत्री कार्यालय
Rachna Hiran
604 Thakur Jewel,
Near HDFC Bank,
Thakur Village, Kandivali East,
Mumbai - 400101
Mob.: 9821385587
Email: rachnapritam@yahoo.co.in

नारीलोक

नारीलोक प्राप्ति हेतु संपर्क सूत्र

Nutan Lodha
Mob.: 9869371153

कोषाध्यक्ष
Mamta Ranka
Indra Chowk New Line,
Gangashahar,
Bikaner- 334401
Mob.: 9414142924
Email: mamtaranka002@gmil.com

www.abtmm.org

www.facebook.com/abtmmjain/

www.youtube.com/channel/UCMnsuMEyhhQWvDbnrfwpdEQ